हरिभूमि
महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि
रोहतक, रविवार 12 अप्रैल 2026

11 समाज सुधार व शिक्षा के क्षेत्र में फुले का रहा अमूल्य...

12 अलवर-खेतड़ी राजमार्ग गड्ढों में तबदील एक साल में तीन...

Affiliated to CBSE
MR SCHOOL
MITTERPURA | ATELI
A Name of Dedication, Hardwork and Sincerity
॥ तमसो मा ज्योतिर्गमय ॥
FOUNDATION / JEE / NEET COACHING with Aakash Faculty Experts
ADMISSION OPEN
Session 2026-27
MR SCHOOL Aakash
Medical IIT-JEE Foundation
Aakash की FACULTY अब MR SCHOOL के साथ
MITTERPURA, NARNAUL (HR.)
9466945658, 9416903367
mrps530543@gmail.com www.mrpublicschool.com
NARNAUL ROAD, ATELI
8278085868, 9416903367
mrpsateli@gmail.com www.mrpsateli.in

रोहतक पीजीआई के निरीक्षण में मिली खामियों के बाद अलर्ट मोड़ में प्रशासन

अस्पतालों में सफाई पर रहेगा विशेष फोकस, डीसी व एसडीएम करेंगे औचक निरीक्षण, कल से चलेगा विशेष सफाई अभियान

अस्पतालों में 24 घंटे अनिवार्य सेवा, डीसी ने दिए सफाई के निर्देश, कोताही बरतने वाले स्टाफ पर होगी सख्त कार्रवाई

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

रोहतक पीजीआई में स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने हाल ही में औचक निरीक्षण किया था। इस दौरान सफाई अव्यवस्था के साथ साथ अन्य कई खामियां सामने आई थी। इसके बाद प्रदेश भर के सभी अस्पतालों को सफाई व्यवस्था के लिए अलर्ट मोड पर रहने के आदेश दिए है। महेंद्रगढ़ जिला में भी प्रशासन ने नए आदेश जारी किए है। अब अस्पतालों में सात दिन और 24 घंटे सफाई व्यवस्था रखने के निर्देश जारी किए है। दवाओं की उपलब्धता और स्टाफ वर्दी में होना जरूरी है। अस्पताल परिसर में पुराने कंडम वाहन या कबाड़ भी नजर नहीं आने चाहिए। यहीं नहीं, इन व्यवस्थाओं को जांचने के लिए उपायुक्त व एसडीएम औचक निरीक्षण भी करेंगे।

स्वास्थ्य केंद्रों पर एक सप्ताह चलेगा विशेष स्वच्छता अभियान

उपायुक्त कैप्टन मनोज कुमार बताते है कि सरकार के इस निर्णय के तहत अब सभी सरकारी अस्पतालों को 24 घंटे साफ, सुथरा और पूरी तरह क्रियाशील रखना अनिवार्य कर दिया गया है। जिला प्रशासन सरकार के इन आदेशों को पूरी गंभीरता से लागू करेगा, ताकि अस्पताल आने वाले किसी भी मरीज को असुविधा न हो। उपायुक्त ने बताया कि सरकार के आदेशानुसार आगामी 13 अप्रैल से जिले के सभी स्वास्थ्य केंद्रों में एक सप्ताह का विशेष स्वच्छता अभियान चलाया जाएगा। उन्होंने बताया कि अब जिले के सभी नागरिक अस्पताल, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र व अन्य चिकित्सा संस्थान सातों दिन और 24 घंटे चालू रहेंगे। उन्होंने बताया कि मरीजों की सुविधा के लिए रजिस्ट्रेशन काउंटरों पर भीड़ को नियंत्रित किया जाएगा और जरूरत पड़ने पर अतिरिक्त काउंटर भी खोले जाएंगे। इसके अलावा अस्पतालों में मरीजों के मार्गदर्शन के लिए हेल्प डेस्क और आयुष्मान भारत हेल्प डेस्क भी सक्रिय रहेंगे।

जच्चा-बच्चा वार्ड की सुंदरता पर रहेगा विशेष फोकस

कैप्टन मनोज कुमार ने बताया कि जच्चा बच्चा वार्डों की सुंदरता पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। इन वार्डों की दीवारों को स्थानीय कलाकारों की मदद से हल्के रंगों और सुंदर चित्रों से सजाया जाएगा। गर्मी के मौसम को देखते हुए सभी अस्पतालों में ठंडे व साफ पीने के पानी, कूलर और मच्छरों से बचाव के इंतजाम सुनिश्चित किए जाएंगे। उपायुक्त ने कहा कि वे स्वयं और जिले के सभी एसडीएम अगले पांच दिनों के भीतर अस्पतालों का निरीक्षण करेंगे। इस दौरान सफाई, दवाओं की उपलब्धता और स्टाफ की उपस्थिति की जांच की जाएगी। यदि कोई कर्मचारी बिना वर्दी के पाया गया या ड्यूटी में किसी भी प्रकार की लापरवाही मिली तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। साथ ही अस्पताल परिसर में खड़े पुराने कंडम वाहनों व कबाड़ को भी तुरंत प्रभाव से हटाने के निर्देश दिए गए हैं।

खबर संक्षेप

ई-रिक्शा में गांजा बेचते आरोपित गिरफ्तार

महेंद्रगढ़। थाना शहर पुलिस टीम ने ई-रिक्शा में गांजा बेचते एक आरोपित को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। आरोपित के कब्जे से 63 ग्राम गांजा पत्ती बरामद की गई है। 10 अप्रैल को पुलिस टीम ब्रह्मदेव चौक के पास गश्त कर रही थी। इसी दौरान उन्हें एक गुप्त सूचना मिली कि लालाराम नाम का व्यक्ति अपनी ई-रिक्शा में सवार होकर रेलवे स्टेशन की तरफ से अनाज मंडी होते हुए माजरा चुंगी की ओर गांजा बेचने जा रहा है।

भगवान परशुराम जन्मोत्सव आज

नारनौल। श्रीगौड़ ब्राह्मण सभा अटेली मंडी की ओर से 12 अप्रैल को भगवान परशुराम जन्मोत्सव भव्य रूप से मनाया जाएगा। समारोह में पावन सानिध्य श्री श्री 108 सुखराम दास महाराज बद्रीनाथ धाम का रहेगा। मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद कार्तिकेय शर्मा उपस्थित रहेंगे। अध्यक्षता प्रधान अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा एलसी जोशी करेंगे, जबकि अति विशिष्ट अतिथि मोहित शर्मा मैनेजिंग डायरेक्टर शक्ति रिसोर्ट बहरोड़ रहेंगे।

प्रजापति समाज परगना कांटी की आमसभा आज

मंडी अटेली। प्रजापति समाज परगना कांटी की आमसभा की बैठक 12 अप्रैल को अटेली स्थित प्रजापति धर्मशाला में आयोजित की जाएगी। सभा के सचिव राकेश प्रजापत ने बताया कि बैठक में वर्ष 2025-26 कालेखा-जोखा प्रस्तुत किया जाएगा। समाज के कार्यों की रूपरेखा भी तय की जाएगी।

पुलिस की कार्यप्रणाली पर सवाल, छिटपुट कार्रवाई के बाद फिर ढीली पड़ी निगरानी

नारनौल में 'नशे का जाल': सुनसान पार्क व खंडहर मकान बने अड्डे, हो रहे अपराध

खुलेआम शराब व चिट्टे का सेवन, चोरी से लेकर छेड़छाड़ तक के घटित हो रहे आए दिन मामले

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

शहर में नशे का कारोबार और नशेड़ियों की बढ़ती गतिविधियां अब आमजन के लिए गंभीर चिंता का विषय बन चुकी हैं। शहर के सुनसान पार्क, खाली प्लॉट और खंडहर हो चुके मकान नशेड़ियों के स्थायी अड्डे बन चुके हैं। हालत यह है कि दिन-दहाड़े खुलेआम शराब पीना और अन्य प्रतिबंधित नशों का सेवन करना यहां आमबात बन गई है, लेकिन इसके बावजूद पुलिस की प्रभावी कार्रवाई कहीं नजर नहीं आ रही।

तालाब बहादुर सिंह चौक स्थित शहर का पुराना भगवान महावीर पार्क, जो कभी हकीकत में पार्क ही था, अब नप इसके आधे भाग में मार्केट विकसित कर चुकी है। आधे पार्क पर कुछ समय पहले तक प्रभावशाली लोगों का वर्चस्व था और उन्होंने बाकायदा चारदीवारी, लोहे के जाल एवं टीनशेड डालकर इस पर पुख्ता कब्जा कर रखा था, लेकिन अब यह बिल्कुल सुनसान रहता है, जिसका फायदा नशा करने वाले ये उठाते हैं और यहां दिन-दहाड़े शराब पीते नजर आते हैं।

इसी प्रकार छिप्पी जोहड़ पर चौधरी देवीलाल शॉपिंग कांपलेक्स, छोटा-बड़ा तालाब, धौबियान जोहड़, निजामपुर रोड फ्लाईओवर पास, बस स्टैंड एवं यादव धर्मशाला के पीछे आदि ऐसे अनेक स्थान हैं, जहां न तो पुलिस की राइडर जाती है और न ही कभी डॉयल 112 देखी गई। यही वजह है कि नशेड़ियों के हौसले बुलंद हैं और वे दिन-दहाड़े नशे का सेवन करते रहते हैं।

नारनौल। पुराने महावीर पार्क में दिन-दहाड़े खुलेआम शराब पीते युवक। फोटो : हरिभूमि

यह बोले नागरिक

जागरूक नागरिकों पवन शुक्ला, फूल सिंह, प्रधान जोगेंद्र जैदिया आदि का कहना है कि शहर के कई पार्कों में सुबह-शाम की बजाय दिन के समय भी संदिग्ध युवक जुटे रहते हैं। ये लोग खासकर नवयुवक न केवल शराब पीते हैं, बल्कि चिट्टा, स्मैक जैसे खतरनाक नशों का सेवन भी करते हैं। कई जगहों पर तो इंजेक्शन और नशे से जुड़े अन्य सामान भी पड़े मिल जाते हैं, जो स्थिति की गंभीरता को दर्शाते हैं। नशे की लत पूरी करने के लिए ये युवक अपराध की राह पकड़ रहे हैं।

नियमित रूप से हो गश्त

जागरूक नागरिकों का कहना है कि यदि पुलिस नियमित रूप से इन स्थानों पर गश्त करे और सख्त कार्रवाई करे, तो स्थिति में सुधार संभव है। साथ ही, प्रशासन को भी नशा मुक्ति अभियान को प्रभावी तरीके से लागू करने की जरूरत है, ताकि युवाओं को इस दलदल से बाहर निकाला जा सके। शहरवासियों ने प्रशासन और पुलिस से मांग की है कि इस गंभीर समस्या पर तुरंत ठोस कदम उठाए जाएं, ताकि नारनौल समेत समूचे जिले को नशे के बढ़ते खतरे से बचाया जा सके।

बढ़ रही चोरी की वारदातें

क्षेत्र में चोरी की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। नशेड़ी बंद पड़े मकानों को निशाना बनाते हैं और अंदर घुसकर घर में रखा सामान तक उठा ले जाते हैं। गिलास, बाल्टी, मग जैसे छोटे-छोटे सामान भी नहीं छोड़ते। इन वस्तुओं को बेचकर जो पैसे मिलते हैं, उससे फिर नशा खरीदा जाता है।

महिलाएं भी सुरक्षित नहीं

स्थिति यहीं तक सीमित नहीं है। कई मामलों में महिलाओं और लड़कियों से छेड़छाड़ की घटनाएं भी सामने आ रही हैं। दिन के समय सुनसान स्थानों पर इनका जमावड़ा होने से महिलाओं में डर का माहौल बना हुआ है। अभिभावकों का कहना है कि बच्चे और लड़कियां अब अकेले पार्कों या खाली रास्तों से गुजरने से कतराने लगी हैं।

पुलिस की भूमिका पर सवाल

आमजन खासकर परेशान लोगों में पुलिस की भूमिका को लेकर भी सवाल उठ रहे हैं। लोगों का कहना है कि पुलिस के पास राइडर और डॉयल 112 जैसी सुविधाएं मौजूद होने के बावजूद इन संवेदनशील स्थानों पर गश्त नहीं बढ़ाई जा रही। इन सुनसान जगहों की तरफ तो पुलिस जाती ही नहीं। स्थिति ऐसी है कि पुलिस मूकदर्शक बनी हुई नजर आती है। हाल ही में हुई ग्रीवेंस कमेटी की बैठक में भी नशे का मुद्दा जोर-शोर से उठा था। बैठक में आरोप लगे कि कुछ स्थानों पर पुलिस की शह पर ही नशे का कारोबार चल रहा है। हालांकि, इसके बाद पुलिस ने कुछ समय के लिए सक्रियता दिखाई और छापेमारी कर कुछ युवकों को पकड़ा भी, लेकिन यह कार्रवाई ज्यादा समय तक जारी नहीं रह सकी।

आसानी से पहुंच रहा नशा

नशे की बढ़ती पहुंच भी चिंता का बड़ा कारण है। पहले जो नशे का सामान बड़े शहरों तक सीमित था, वह अब गांवों तक आसानी से उपलब्ध हो रहा है। खासकर चिट्टे की एक खुराक महज 500 रुपये में मिल जाती है, जिससे युवा तेजी से इसकी चपेट में आ रहे हैं। एक बार सेवन करने के बाद नशेड़ी कई घंटों तक इसके प्रभाव में रहते हैं। परिवार भी इस समस्या से बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं। कई माता-पिता अपने बच्चों की नशे की लत से परेशान हैं, लेकिन उनकी बात तक नहीं मानी जाती। नशे की गिरफ्त में आए युवक घर से पैसे मांगते हैं और न मिलने पर चोरी-चकारी जैसे कदम उठाने से भी नहीं चूकते।

बैंक कर्मी बन ठगे एक लाख

मंडी अटेली। कस्बे में स्थित पंजाब नेशनल बैंक में बैंक कर्मचारी बनकर आए ठग ने व्यक्ति को एक लाख रुपये की ठगी का शिकार बना लिया। पीड़ित ने थाना अटेली में शिकायत देकर आरोपित के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। गांव तिगरा निवासी शीशराम ने बताया कि वह अपने घर के खर्च के लिए पैसे निकालने अटेली स्थित पंजाब नेशनल बैंक गया था। उसने अपने खाते से एक लाख 50 हजार रुपये निकाले। उसी दौरान बैंक के अंदर मौजूद एक व्यक्ति ने खुद को बैंक कर्मचारी बताते हुए उससे कहा कि वह अपने पैसे गिन ले। शिकायत मुताबिक शीशराम जब 500-500 रुपये की तीन गड्डियों में से एक गड्डी गिन रहा था, तो उसमें एक नोट फटा हुआ मिला। इस पर उस व्यक्ति ने कहा कि वह बाकी गड्डियां बदलवा देता है और शीशराम को एक गड्डी गिनने के लिए दे दी। इस दौरान शीशराम काउंटर के पास बैठकर पैसे गिनने लगा। इसी बीच वह अज्ञात व्यक्ति चकमा देकर 50-50 हजार रुपये की दो गड्डियां यानी कुल एक लाख रुपये लेकर बैंक से फरार हो गया। कुछ देर बाद जब शीशराम को इसका एहसास हुआ तो उसने बैंक में पूछताछ की, लेकिन आरोपित तब तक वहां से फरार हो चुका था। पुलिस शिकायत के आधार पर बैंक में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालकर उसकी पहचानकरने में जुटी है।

कनीना। गेहूं व सरसों के अवैध स्टॉक को चेक करती सीएम फ्लाइंग। फोटो : हरिभूमि

सीएम फ्लाइंग ने छापेमारी कर पकड़ा सरसों और गेहूं का अवैध स्टॉक

जमाखोरी और कालाबाजारी पर आगे भी जारी रहेगा अभियान

हरिभूमि न्यूज ⏭ कनीना

क्षेत्र में शनिवार को मुख्यमंत्री उड़नदस्ता वह मार्केट कमेटी की टीम ने संयुक्त रूप से अवैध रूप से जमा किए गए सरसों व गेहूं के स्टॉक पर छापेमारी की। इस बारे में हाल ही में मार्केटिंग बोर्ड उपमंडल सरिया अधिकारियों ने कनीना के विभिन्न गोदाम पर पहुंचकर जमाखोरी का औचक निरीक्षण किया था। जिसमें उन्होंने गोदाम संचालकों को हिदायत भी दी थी। छापेमारी में टीम ने क्षेत्र में गोदामों की जांच की, जहां भारी मात्रा में सरसों का स्टॉक मिला। जिसे अपने कब्जे में लेकर जांच की गई। संबंधित व्यापारियों से पूछताछ करके आवश्यक कानूनी कार्रवाई की तैयारी की जा रही है। टीम ने कहा कि जमाखोरी व कालाबाजारी के खिलाफ यह अभियान आगे भी जारी रहेगा। टीम ने सरसों पर 80500 गेहूं पर 26000 रुपये की मार्केट फीस सहित 3.50 लाख रुपये की जीएसटी की चोरी पकड़ी है।

नांगल चौधरी। टोल प्लाजा पर अप्रिय घटना से निपटने के लिए तैनात पुलिस बल।

किसान आंदोलन : प्रशासन अलर्ट टोल प्लाजा पर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था

नांगल चौधरी। संभावित किसान आंदोलन के मद्देनजर शनिवार को प्रशासन पूरी तरह अलर्ट मोड़ पर नजर आया। सिरोही बहाली स्थित 148 बी टोल प्लाजा को सुरक्षा की दृष्टि से संवेदनशील मानते हुए यहां सुबह से ही भारी पुलिस बल तैनात किया गया। किसी भी अप्रिय स्थिति से निपटने के लिए पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों ने पूरे क्षेत्र में व्यापक सुरक्षा प्रबंध किए तथा हर गतिविधि पर पैनी नजर बनाए रखी। किसान संगठनों ने शनिवार की सुबह 11 से दोपहर तीन बजे तक धरना प्रदर्शन और टोल फ्री करने का अल्टीमेटम दिया था। इसके बाद जिला प्रशासन ने सुबह आठ बजे ही टोल प्लाजा तथा अन्य सार्वजनिक स्थलों पर गश्त बढ़ा दी। डीएसपी के नेतृत्व में नांगल चौधरी पुलिस को टोल प्लाजा पर कानून व्यवस्था बनाए रखने के निर्देश दिए गए।

दीक्षा के बाद कहलाएंगी जैन साध्वी — **परिवार ने आयोजित किया मिलन समारोह, पलक को दिया आशीर्वाद**

आज परिवार को अलविदा कह देगी मुमुक्षु पलक

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

शहर की प्रसिद्ध फर्म रामरिछपाल लक्ष्मीचंद जैन के संचालक राजेश जैन की बेटी पलक पूरे परिवार को सदा के लिए अलविदा करके जैन साध्वी बनने जा रही है। पहल अपनी गुरुनी भाग्य प्रभा महाराज के पास दिल्ली जाएगी। उसकी वहां 23 अप्रैल को दीक्षा होगी। इसमें पांच महावर्त संकल्प (अहिंसा, सत्य, अचोर्या, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) पूरा होने के बाद पलक मुमुक्षु से जैन साध्वी कहलाएंगी। इस अनमोल क्षण को यादगार बनाने के लिए पूरे परिवार ने एक दिन पहले शनिवार को महता चौक स्थित कुटुम्ब पैलेस में मिलन समारोह रखा। यहां परिवार, रिश्तेदार व शहर के अनेक गणमान्यजन पहुंचे और मुमुक्षु पलक को आशीर्वाद दिया। इस समारोह में परिवार के बच्चों ने एक पलक के जीवन पर आधारित नाटिका प्रस्तुत की। इस नाटिका से सभी को भाव विभोर कर दिया।

नारनौल। माता-पिता के साथ मुमुक्षु पलक। फोटो : हरिभूमि

पलक बहन ने जाते जाते अपने उदगार प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज मैं मेरी जन्मभूमि को छोड़कर अपनी गुरुनी मैया के पास जा रही हूं। आज से हमारा संसार के बने रिश्ते समाप्त हो जाएंगे। पलक ने कहा कि संसार एक ऐसी माया का सागर है जिसकी चकाचौंध में फंस कर न जाने अनगिनत लोग जन्म लेते है और मर जाते है। बाद में उनका जीवन का मूल्यांकन करते है तो परिणाम शून्य बटा शून्य ही रहता है। व्यक्ति को मनुष्य भाव की दुर्लभता को जानकर अपना जीवन सार्थक करना चाहिए। पलक ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति दीक्षा नहीं ले सकता, लेकिन उसको अपने जीवन कषाय का त्याग कर देना चाहिए। उसने कहा कि जाते जाते मेरा एक ही संदेश है कि व्यक्ति को काम, क्रोध, माया, लोभ का त्याग कर देना चाहिए। ये ही पाप के कारण है। उसने भरी सभा में कहा कि व्यक्ति के इन चार चीज के कारण ही पाप करता है। इस मिलन समारोह में नगर के गणमान्य लोगों में जय प्रकाश चौधरी, सुरेश चौधरी, कांति लाल मेहता, नीरज अग्रवाल, वीडी वशिष्ठ, रामनीश जैन, राजेश जैन, मनीष जैन, अतुल जैन, महेश, दीपक, राजीव, कमल, सुनील, मनीष एवं बहुत संख्या में महिलाएं उपस्थित थी।

40 लाख की नौकरी का पैकेज छोड़ा

श्रीएसएस जैन सभा के सचिव मुकेश जैन ने बताया कि पलक ने 12वीं नारनौल डीएवी स्कूल से की। इसके बाद दिल्ली यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएशन और एमएससी मैथ से की। वहीं स्कॉलरशीप मिली और प्लेसमेंट होने के बाद एक साल बैंगलोर में आईटी की जॉब की। वहां से आकर चार साल गुरुग्राम में जॉब की। उस वक्त पलक को 40 लाख का पैकेज मिल रहा था। इसी बीच एक बार पाली मारवाड़ में भाग्य प्रभा का प्रवचन सुनने गई। वहां प्रवचन से इतनी प्रभावित हुई कि उसने सब त्यागने का फैसला कर जैन साध्वी बनना तय किया। उस दौरान परिजन बेटी के लिए लड़का देख रहे थे। पलक ने इनकार कर दिया। फिर करीब डेढ़ साल साध्वी की शरण में रही और वहां परखने के बाद दीक्षा की पात्र लगी तो उसे दीक्षा की अनुमति मिली।

लार्ज कैप में बने निवेश के मौके

तीन से पांच साल में दे सकता है अच्छी ग्रोथ

18 महीने की कमजोरी के बाद बन रहा बढ़िया संतुलन

गिरते बाजार में लार्ज कैप बन सकता है भरोसे का सहारा

शॉर्ट टर्म दबाव के बावजूद लॉन्ग टर्म तस्वीर मजबूत

बिजनेस डेस्क

वैश्विक अनिश्चितताओं और मिडिल ईस्ट में बढ़ते तनाव के बीच शेयर बाजार में हालिया गिरावट ने निवेशकों को असमंजस में डाल दिया है। खासकर मिड और स्मॉल कैप शेयरों में तेज गिरावट के कारण जोखिम की धारणा बढ़ी है। हालांकि, इसी दौर में लार्ज कैप शेयर निवेश के लिए मजबूत विकल्प बनकर उभरे हैं। करीब 18 महीनों की गिरावट के बाद इनका वैल्यूएशन अब आकर्षक स्तर पर आ चुका है, जिससे लंबी अवधि के निवेशकों के लिए एंट्री का अच्छा मौका बनता दिख रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि शॉर्ट टर्म में भले ही बाजार पर दबाव बना रहे, लेकिन भारत के मजबूत मैक्रो फंडामेंटल्स और कंपनियों की संभावित अर्निंग ग्रोथ आने वाले वर्षों में बेहतर रिटर्न का आधार बन सकती है। ऐसे में 3 से 5 साल का नजरिया रखने वाले निवेशकों के लिए यह समय वेल्थ क्रिएशन का अवसर साबित हो सकता है। पिछले डेढ़ साल में बाजार में आई गिरावट का असर सबसे ज्यादा मिडकैप और स्मॉलकैप शेयरों पर देखने को मिला। हालांकि, लार्ज कैप कंपनियों ने अपेक्षाकृत स्थिरता दिखाई। इस दौरान लगातार दबाव के चलते अब इन कंपनियों के वैल्यूएशन काफी संतुलित और निवेश के लिहाज से आकर्षक हो गए हैं।

- मिड और स्मॉल कैप में गिरावट, लार्ज कैप ने दिखाई

तेल की कीमत और जियो-पॉलिटिकल टेंशन का असर

- रिपोर्ट के अनुसार, फिलहाल बाजार पर दबाव बना रह सकता है। मिडिल ईस्ट में तनाव, होर्मुज स्ट्रेट के आसपास क्रूड सप्लाई की चिंता और वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताएं बाजार की दिशा तय कर रही हैं।
- इन कारणों से शॉर्ट टर्म में उतार-चढ़ाव जारी रह सकता है। लेकिन यह दबाव स्थायी नहीं है। जैसे-जैसे परिस्थितियां सामान्य होंगी, बाजार में स्थिरता लौटने की उम्मीद है।

कंपनियों की कमाई तय करेगी भविष्य

विशेषज्ञों का मानना है कि आने वाले समय में बाजार की दिशा केवल वैल्यूएशन पर निर्भर नहीं रहेगी, बल्कि कंपनियों की वास्तविक कमाई अहम भूमिका निभाएगी। लार्ज कैप कंपनियां, जो पहले से ही मजबूत बिजनेस मॉडल और स्थिर कैश फ्लो रखती हैं, इस मामले में बेहतर स्थिति में हैं। ऐसे में इन कंपनियों में निवेश करने से दीर्घकाल में बेहतर रिटर्न मिलने की संभावना है।

गोल्ड, क्रिप्टो और इक्विटी हर जगह अस्थिरता

हाल के महीनों में सिर्फ शेयर बाजार ही नहीं, बल्कि गोल्ड और क्रिप्टो जैसी एसेट क्लास में भी भारी उतार-चढ़ाव देखा गया है। यह दर्शाता है कि वैश्विक निवेश माहौल फिलहाल अस्थिर है। इस तरह के समय में निवेशकों के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह होती है कि वे भावनात्मक फैसलों से बचें और लंबी अवधि की रणनीति पर टिके रहें।

वैश्विक दबाव के बावजूद अर्थव्यवस्था स्थिर

विदेशी निवेशकों की बिकवाली और बाजार में गिरावट के बावजूद भारत की आर्थिक स्थिति मजबूत बनी हुई है। ये सभी संकेत बताते हैं कि भारतीय अर्थव्यवस्था वैश्विक दबावों को झेलने में सक्षम है। तेल की कीमतों में बढ़ोतरी का असर भी सीमित रहने की उम्मीद है।

इतिहास भी देता है यही संकेत

- अगर इतिहास पर नजर डालें, तो हर बड़े संकट के बाद बाजार ने मजबूती से वापसी की है।
- 1991 के आर्थिक सुधार
- ग्लोबल फाइनेंशियल क्राइसिस (2008)
- कोविड-19 महामारी
- इन सभी घटनाओं के बाद भारत ने न सिर्फ रिकवरी की, बल्कि पहले से ज्यादा मजबूत होकर उभरा। यही कारण है कि विशेषज्ञ मौजूदा समय को भी एक अवसर के रूप में देख रहे हैं।

3 से 5 साल में वेल्थ क्रिएशन की संभावना

- धैर्य रखने वाले निवेशकों को मिल सकता है फायदा
- -लंबी अवधि के निवेशकों के लिए मौजूदा दौर जोखिम से ज्यादा अवसर का संकेत देता है। खासकर लार्ज कैप -शेयरों में, जहां वैल्यूएशन अब संतुलित हो चुके हैं।
- यदि निवेशक 3 से 5 साल का नजरिया रखते हैं, तो इस स्तर पर किया गया निवेश अच्छी वेल्थ क्रिएशन का आधार बन सकता है।

निवेशकों के लिए क्या है रणनीति?

- समझदारी और अनुशासन है जरूरी
- लॉन्ग टर्म दृष्टिकोण अपनाएं– शॉर्ट टर्म उतार-चढ़ाव से घबराएं नहीं
- लार्ज कैप पर फोकस करें– स्थिरता और सुरक्षा के लिए
- एसआईपी के जरिए निवेश करें– बाजार टाइमिंग से बचने के लिए
- डाइवर्सिफिकेशन बनाए रखें– जोखिम कम करने के लिए

असमंजस में निवेशक

- मौजूदा वैश्विक अनिश्चितताओं और बाजार की गिरावट ने निवेशकों को जरूर असमंजस में डाला है, लेकिन यही समय नए अवसर भी लेकर आया है। लार्ज कैप शेयरों में 18 महीनों की गिरावट के बाद वैल्यूएशन अब आकर्षक स्तर पर हैं, जो लंबी अवधि के निवेशकों के लिए एक मजबूत एंट्री पॉइंट बन सकता है।
- आने वाले 3–5 साल में, यदि आर्थिक परिस्थितियां सामान्य होती हैं और कंपनियों की कमाई में सुधार होता है, तो यह निवेश अच्छी वेल्थ में बदल सकता है। इसलिए, डर के बजाय समझदारी और धैर्य के साथ निवेश करना इस समय की सबसे बड़ी जरूरत है।

महीने के आखिर में खाली जेब से हैं परेशान तो बदल लें कुछ आदतें

सुझाव

बिजनेस डेस्क

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में पैसे कमाना जितना जरूरी है, उतना ही जरूरी है उसे सही तरीके से संभालना। अक्सर देखा जाता है कि अच्छी कमाई करने वाले लोग भी महीने के अंत में पैसों की कमी महसूस करते हैं। इसका मुख्य कारण है बिना योजना के खर्च करना। छोटी-छोटी अनावश्यक चीजों पर खर्च धीरे-धीरे इतना बढ़ जाता है कि महीने के आखिर में समझ नहीं आता कि पैसा आखिर गया कहां। अगर आप भी इस स्थिति से गुजर रहे हैं, तो घबराने की जरूरत नहीं है। कुछ आसान और व्यावहारिक आदतों को अपनाकर आप अपनी फाइनेंशियल लाइफ को बेहतर बना सकते हैं और आर्थिक तनाव से राहत पा सकते हैं।

जरूरत व इच्छा में फर्क समझें

फाइनेंशियल मैनेजमेंट की सबसे पहली और महत्वपूर्ण सीढ़ी है जरूरत और इच्छा के बीच अंतर समझना। जरूरतें वे होती हैं जो जीवन के लिए जरूरी हैं, जैसे किराया, राशन, बिजली-पानी के बिल, बच्चों की फीस और रोजमर्रा के खर्च। वहीं, इच्छाएं वे हैं जो जीवन को आरामदायक बनाती हैं जैसे बाहर खाना, ऑनलाइन शॉपिंग या नए गैजेट्स खरीदना। यदि आप हर खर्च से पहले खुद से यह पूछना शुरू कर दें कि "क्या यह जरूरी है या सिर्फ इच्छा?", तो आपकी आधी समस्या वहीं खत्म हो जाएगी। यह आदत आपको फालतू खर्च से बचाएगी और बचत बढ़ाने में मदद करेगी।

खर्च लिखने की आदत डालें

अक्सर हम यह समझ ही नहीं पाते कि हमारा पैसा कहां खर्च हो रहा है। ऐसे में रोजाना के खर्च को लिखने की आदत बेहद फायदेमंद होती है। आप एक नोटबुक या मोबाइल ऐप का इस्तेमाल कर सकते हैं। जब आप हर खर्च को रिकॉर्ड करते हैं, तो आपको साफ दिखाई देने लगता है कि किन चीजों पर ज्यादा पैसा जा रहा है।

- जैसे बार-बार बाहर खाना, ऑनलाइन ऑर्डर या बिना सोचे-समझे खरीदारी। यह आदत धीरे-धीरे आपको अनुशासित बनाती है और अनावश्यक खर्च अपने आप कम होने लगते हैं।

हर रुपये का एक उद्देश्य तय करें

- जब आपको अपनी आय और खर्च का सही अंदाजा हो जाए, तो अगला कदम है। हर रुपये को एक उद्देश्य देना।
- आप अपनी आय को तीन हिस्सों में बांट सकते हैं।
- जरूरी खर्च
- लाइफस्टाइल (इच्छाएं)
- बचत
- जब हर रुपये का काम पहले से तय होता है, तो पैसा इधर-उधर बिखरता नहीं है।

इससे आप अपने खर्च को बेहतर तरीके से नियंत्रित कर पाते हैं और भविष्य की योजना बनाना आसान हो जाता है।

बचत को सबसे जरूरी खर्च मानें

- ज्यादातर लोग बचत को सबसे आखिरी में रखते हैं। जो बचेगा, उसे बचा लेंगे। यही सबसे बड़ी गलती है।
- सही तरीका यह है कि जैसे ही आपकी सैलरी आए, सबसे पहले एक तय राशि बचत के लिए अलग कर दें।
- भले ही शुरुआत छोटी हो, लेकिन नियमितता बहुत जरूरी है। हर महीने की यह छोटी बचत धीरे-धीरे एक बड़े फंड में बदल जाती है। यही फंड भविष्य में किसी इमरजेंसी में आपकी सबसे बड़ी ताकत बनता है। बचत करने से न सिर्फ आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होती है, बल्कि आपको मानसिक शांति और आत्मविश्वास भी मिलता है।

समय-समय पर खर्च की समीक्षा करें

- फाइनेंशियल प्लानिंग कोई एक बार का काम नहीं है, बल्कि यह एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है।
- हर 2–3 महीने में अपने खर्चों की समीक्षा जरूर करें। देखें कि कहां ज्यादा खर्च हो रहा है, किन चीजों को कम किया जा सकता है और बचत बढ़ाने के क्या मौके हैं। बड़े बदलाव करने की बजाय छोटे-छोटे सुधार करें, जैसे बाहर खाने की आदत कम करना या अनावश्यक सब्सक्रिप्शन बंद करना। ये छोटे बदलाव लंबे समय में बड़ा असर डालते हैं।

समझदारी से खर्च, बेहतर भविष्य

पैसों को संभालना कोई मुश्किल काम नहीं है। इसके लिए सिर्फ जागरूकता और अनुशासन की जरूरत होती है। जब आप अपनी जरूरतों को समझते हैं, इच्छाओं को नियंत्रित करते हैं और हर रुपये का सही इस्तेमाल करते हैं, तो धीरे-धीरे आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होने लगती है। महीने के अंत में खाली जेब की चिंता तभी खत्म होती है, जब आप अपने पैसों पर नियंत्रण पा लेते हैं। याद रखें पैसा कमाना महत्वपूर्ण है, लेकिन उसे सही तरीके से संभालना ही असली समझदारी है। यही छोटी-छोटी आदतें आपको आर्थिक रूप से मजबूत बनाकर जीवन में सुकून दिला सकती हैं।

सैलरी पर भरोसा काफी नहीं, मुश्किल समय में बैकअप ही असली सुरक्षा

- एसआईपी और आरडी से आसान है इमरजेंसी फंड तैयार करना
- निवेश नहीं, इसका जरूरत के समय काम आना है मुख्य मकसद
- लिक्विड फंड ही दे सकता है सही समय पर बड़ी राहत

बचत मंत्र

बिजनेस डेस्क

आज के समय में नियमित सैलरी को लोग आर्थिक स्थिरता का प्रतीक मानते हैं, लेकिन हकीकत इससे काफी अलग है। बाहर से सुरक्षित दिखने वाली नौकरीपेशा जिंदगी अंदर से कई बार बेहद कमजोर होती है। एक छोटी सी समस्या जैसे नौकरी छूटना, मेडिकल इमरजेंसी या सैलरी में देरी पूरे वित्तीय संतुलन को बिगाड़ सकती है। यही वजह है कि वित्तीय विशेषज्ञ लगातार इमरजेंसी फंड बनाने पर जोर दे रहे हैं। जानकारों का कहना है कि बिना इमरजेंसी फंड के सैलरी पर निर्भर रहना वैसा ही है जैसे बिना स्टेपनी (स्पेयर टायर) के गाड़ी चलाना। जब तक सब कुछ ठीक चलता है, तब तक कोई समस्या नहीं दिखती, लेकिन जैसे ही रास्ते में दिक्कत आती है, पूरा सफर रुक जाता है।

इमरजेंसी फंड क्यों जरूरी

इमरजेंसी फंड एक ऐसा वित्तीय सुरक्षा कवच है, जो अचानक आने वाली परिस्थितियों में आपको कर्ज लेने से बचाता है। नौकरीपेशा लोगों के लिए यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि उनकी आय का मुख्य स्रोत एक ही होता है मासिक सैलरी। हर व्यक्ति के पास कम से कम 6 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड होना चाहिए। उदाहरण के तौर पर, यदि किसी परिवार का मासिक खर्च 40,000 रुपये है, तो उसे कम से कम 2.4 लाख रुपये का फंड तैयार रखना चाहिए। यह राशि किसी ऐसे माध्यम में होनी चाहिए, जहां से जरूरत पड़ने पर तुरंत पैसा निकाला जा सके जैसे सेविंग अकाउंट या फिक्स्ड डिपॉजिट।

कर्ज के जाल में फंसने का खतरा

इमरजेंसी फंड न होने का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि मुश्किल समय में लोगों को कर्ज का सहारा लेना पड़ता है। आंकड़ों के अनुसार, करीब 70% नौकरीपेशा भारतीयों के पास कोई लिक्विड बैकअप नहीं होता। ऐसे में जब अचानक पैसों की जरूरत पड़ती है, तो लोग क्रेडिट कार्ड या पर्सनल लोन का सहारा लेते हैं। यह कर्ज सस्ता नहीं होता। कई बार क्रेडिट कार्ड पर ब्याज दर 30% से 36% तक पहुंच जाती है। इसका असर यह होता है कि एक छोटी सी समस्या धीरे-धीरे बड़े कर्ज में बदल जाती है। नई नौकरी मिलने तक कर्ज बढ़ता जाता है और उसे चुकाने में कई साल लग जाते हैं।

धीरे-धीरे बनाएं इमरजेंसी फंड

अक्सर लोग सोचते हैं कि इमरजेंसी फंड बनाने के लिए एक साथ बड़ी रकम चाहिए, लेकिन ऐसा नहीं है। धीरे-धीरे तैयार किया जा सकता है।

कुछ आसान तरीके

- हर महीने 5,000 रुपये की एसआईपी या रिकरिंग डिपॉजिट (आरडी) शुरू करें
- बचत को ऑटोमेट करें, ताकि नियमितता बनी रहे
- बोनस या अतिरिक्त आय का कुछ हिस्सा इसमें जोड़ें
- अनावश्यक खर्चों को कम करके बचत बढ़ाएं
- समय के साथ यह छोटी-छोटी बचत एक मजबूत फंड में बदल जाती है, जो किसी भी संकट में आपकी मदद कर सकता है।

निवेश नहीं, सुरक्षा है प्राथमिक उद्देश्य

इमरजेंसी फंड को निवेश के रूप में नहीं देखना चाहिए। इसका उद्देश्य ज्यादा रिटर्न कमाना नहीं, बल्कि जरूरत पड़ने पर तुरंत उपलब्ध होना है। इसलिए इसे ऐसे विकल्पों में रखना बेहतर होता है जहां लिक्विडिटी बनी रहे और पैसा तुरंत निकाला जा सके। कई लोग ज्यादा रिटर्न के चक्कर में इसे शेयर बाजार या लंबी अवधि के निवेश में डाल देते हैं, जो गलत रणनीति हो सकती है। इमरजेंसी में समय सबसे अहम होता है, और ऐसे में देरी या नुकसान दोनों ही परेशानी बढ़ा सकते हैं।

गोल्ड ईटीएफ में निवेश 57% घटा सिल्वर से भी लगातार निकासी

अलर्ट

बिजनेस डेस्क

मार्च 2026 में कमोडिटी आधारित निवेश विकल्पों में सुस्ती देखने को मिली है। गोल्ड ईटीएफ में जहां निवेश 57% घटकर 2,265 करोड़ रुपये रह गया, वहीं सिल्वर ईटीएफ से लगातार दूसरे महीने भी निकासी दर्ज की गई। यह ट्रेंड बताता है कि निवेशक फिलहाल सतर्क रुख अपना रहे हैं। हालांकि, विशेषज्ञों का मानना है कि मौजूदा गिरावट के बावजूद लंबी अवधि में सोना अब भी एक मजबूत निवेश विकल्प बना हुआ है, जबकि सिल्वर में समझदारी से और चरणबद्ध निवेश की जरूरत है।

गोल्ड ईटीएफ में इनफ्लो घटा, दिलचस्पी बरकरार

एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एएमएफआई) के आंकड़ों के मुताबिक, फरवरी के 5,254 करोड़ के मुकाबले मार्च में गोल्ड ईटीएफ में निवेश घटकर 2,265 करोड़ रुपये रह गया। यह 57% की बड़ी गिरावट है। हालांकि, यह ध्यान देने वाली बात है कि इनफ्लो पूरी तरह रुका नहीं है, बल्कि इसकी गति धीमी हुई है। विशेषज्ञों के अनुसार, साल की शुरुआत में तेज निवेश के बाद अब बाजार सामान्य स्थिति में लौट रहा है, जिससे नए निवेश में थोड़ी कमी आई है।

कमोडिटी ईटीएफ में कमजोरी के बीच निवेशकों के लिए क्या है सही रणनीति

सिल्वर ईटीएफ से लगातार दूसरे महीने निकासी

सिल्वर ईटीएफ में निवेशकों का भरोसा फिलहाल कमजोर होता दिख रहा है। मार्च में 683 करोड़ रुपये का आउटफ्लो हुआ, जबकि फरवरी में 826 करोड़ रुपये की निकासी दर्ज की गई थी। यह लगातार दूसरा महीना है जब निवेशकों ने सिल्वर से पैसा निकाला है। इसका मुख्य कारण सिल्वर की अधिक अस्थिरता और हालिया गिरावट मानी जा रही है।
कमोडिटी ईटीएफ का प्रदर्शन रहा कमजोर मार्च महीने में कमोडिटी ईटीएफ का प्रदर्शन व्यापक रूप से कमजोर रहा। कुल 43 कमोडिटी ईटीएफ में से सभी ने नेगेटिव रिटर्न दिया।

सिल्वर ईटीएफ में सबसे ज्यादा गिरावट देखने को मिली

- यूटीआई सिल्वर ईटीएफ: करीब 14.72% की गिरावट
- डीएसपी सिल्वर ईटीएफ: 13.96% की गिरावट
- आदित्य बिड़ला एसएल सिल्वर ईटीएफ: 13.85% की गिरावट
- जेरोधा सिल्वर ईटीएफ: 13.81% की गिरावट
- एचडीएफसी सिल्वर ईटीएफ: 13.81% की गिरावट
- अन्य सिल्वर ईटीएफ में भी 11% से 13.80% तक की गिरावट दर्ज की गई।

गोल्ड ईटीएफ भी दबाव में

गोल्ड ईटीएफ भी इस गिरावट से अछूते नहीं रहे। मार्च में 25 गोल्ड ईटीएफ में 7.17% से 9.54% तक का नेगेटिव रिटर्न दर्ज किया गया। यह दर्शाता है कि सोना, जिसे आमतौर पर सुरक्षित निवेश माना जाता है, वह भी मौजूदा बाजार परिस्थितियों में दबाव में रहा। लंबी अवधि में सोना अभी भी मजबूत विशेषज्ञों का मानना है कि भले ही शॉर्ट टर्म में सोने में उतार-चढ़ाव बना रहे, लेकिन मिड और लॉन्ग टर्म में इसकी संभावनाएं अभी भी सकारात्मक हैं।

इसके पीछे प्रमुख कारण

- वैश्विक अनिश्चितता
- महंगाई का दबाव
- सुरक्षित निवेश की मांग
- ऐसे में निवेशक गिरावट के समय धीरे-धीरे निवेश (बाई ऑन डिप्स) की रणनीति अपना सकते हैं।

सिल्वर में निवेशः सतर्कता और रणनीति जरूरी

सिल्वर की प्रकृति सोने की तुलना में ज्यादा अस्थिर होती है। यही कारण है कि इसमें अचानक तेजी और गिरावट दोनों देखने को मिलती है। विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि सिल्वर में एकमुश्त निवेश करने के बजाय चरणबद्ध तरीके से निवेश करना बेहतर है।

शॉर्ट टर्म में क्या रह सकता है ट्रेंड?

- रिपोर्ट्स के अनुसार, शॉर्ट टर्म में सोने की कीमतें एक सीमित दायरे में रह सकती हैं। इसके पीछे कारण हैं:
- अमेरिका में ब्याज दरों में स्थिरता
- मजबूत डॉलर
- ऊंची बॉन्ड यील्ड
- इन वजहों से सोने की कीमतों में करीब 5% तक का उतार-चढ़ाव संभव है।

निवेशकों के लिए क्या है सही रणनीति?

- गोल्ड में गिरावट पर धीरे-धीरे निवेश करें
- सिल्वर में एकमुश्त निवेश से बचें
- एसआईपी या स्टैगर्ड तरीका अपनाएं
- पोर्टफोलियो में विविधता बनाए रखें
- शॉर्ट टर्म उतार-चढ़ाव से घबराएं नहीं, लॉन्ग टर्म पर फोकस रखें

फिलहाल दबाव बना

मार्च 2026 के आंकड़े बताते हैं कि कमोडिटी ईटीएफ, खासकर गोल्ड और सिल्वर में फिलहाल दबाव बना हुआ है। हालांकि, यह गिरावट स्थायी नहीं मानी जा रही। सोना अभी भी लंबी अवधि के लिए एक भरोसेमंद निवेश विकल्प बना हुआ है, जबकि सिल्वर में सावधानी और सही रणनीति के साथ निवेश करना जरूरी है। निवेशकों के लिए यह समय घबराने का नहीं, बल्कि समझदारी से कदम उठाने का है। सही रणनीति और धैर्य के साथ किया गया निवेश भविष्य में बेहतर रिटर्न दे सकता है।

फ्लेक्सी कैप फंड्स बने निवेशकों की पहली पसंद, पैसिव फंड्स में भी तेजी

मार्च में इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में निवेश 56% बढ़कर 40,450 करोड़

- फ्लेक्सी कैप फंड्स में सबसे ज्यादा 10,054 करोड़ का इनफ्लो
- पैसिव फंड्स में भी दिखाई दी 122 प्रतिशत तक की उछाल

बिजनेस डेस्क

मार्च 2026 में म्यूचुअल फंड निवेश के रुझानों में बड़ा बदलाव देखने को मिला है। इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में निवेश 56% की तेज बढ़त के साथ 40,450 करोड़ तक पहुंच गया, जो निवेशकों के मजबूत होते भरोसे का संकेत है। खासकर फ्लेक्सी कैप फंड्स निवेशकों की पहली पसंद बनकर उभरे, जबकि मिड कैप और स्मॉल कैप फंड्स में भी अच्छा इनफ्लो देखा गया। इसके विपरीत, डेट और हाइब्रिड फंड्स से बड़ी मात्रा में निकासी हुई, जो बाजार में बदलती रणनीति को दर्शाती है। वहीं, कम लागत और पारदर्शिता के चलते इंडेक्स फंड्स और ईटीएफ जैसे पैसिव फंड्स में निवेश में जबरदस्त उछाल दर्ज किया गया। यह ट्रेंड साफ संकेत देता है कि निवेशक अब अधिक जागरूक होकर लॉन्ग टर्म ग्रोथ और बेहतर रिटर्न के लिए अपने पोर्टफोलियो में बदलाव कर रहे हैं, जिससे आने वाले समय में निवेश के पैटर्न और भी स्पष्ट हो सकते हैं।

इक्विटी फंड्स में 56% की छलांग

मार्च महीने में इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में कुल 40,450 करोड़ रुपये का इनफ्लो दर्ज किया गया, जो फरवरी के 25,977 करोड़ रुपये के मुकाबले 56% अधिक है। सालाना आधार पर भी इसमें 61% की बढ़त देखने को मिली, जो निवेशकों के बढ़ते विश्वास को दर्शाता है। इस उछाल के पीछे कई कारण माने जा रहे हैं जैसे बाजार में स्थिरता, लंबी अवधि के निवेश का बढ़ता ट्रेंड और एसआईपी के जरिए नियमित निवेश।

फ्लेक्सी कैप फंड्स ने मारी बाजी

इक्विटी फंड्स की 11 सब-कैटेगरी में से फ्लेक्सी कैप फंड्स सबसे आगे रहे। मार्च में इनमें 10,054 करोड़ रुपये का निवेश आया। यह लगातार दूसरा महीना है जब इस कैटेगरी में 10,000 करोड़ रुपये से अधिक का इनफ्लो दर्ज हुआ है। फ्लेक्सीकैप फंड्स की खासियत यह है कि ये बाजार की स्थिति के अनुसार लार्ज, मिड और स्मॉल कैप शेयरों में लचीलापन रखते हैं, जिससे जोखिम और रिटर्न का बेहतर संतुलन मिलता है।

मिडकैप-स्मॉलकैप फंड्स में भी दम

- स्मॉलकैप फंड्स : 6,263 करोड़ रुपये का इनफ्लो
- मिडकैप फंड्स : 6,063 करोड़ का इनफ्लो रुपये
- इन दोनों कैटेगरी में भी निवेशकों की दिलचस्पी बनी रही। खासकर स्मॉलकैप फंड्स में 61% और मिडकैप में 51% की मासिक बढ़त दर्ज की गई, जो हाई-रिस्क, हाई-रिटर्न रणनीति की ओर इशारा करती है।

वैल्यू और फोकस्ड फंड्स में तेज ग्रोथ

- मंथली आधार पर
- वैल्यू/कॉन्ट्रा फंड्स: 196% वृद्धि
- फोकस्ड फंड्स: 169% वृद्धि
- हालांकि कुल इनफ्लो के मामले में वैल्यू/कॉन्ट्रा फंड्स सबसे नीचे रहे, जहां 2,155 करोड़ रुपये का निवेश आया।

ईएलएसएस और डिविडेंड फंड्स से निकासी

- मार्च में कुछ इक्विटी कैटेगरी में निवेशकों ने मुनाफावसूली भी की:
- ईएलएसएस फंड्स: 437 करोड़ का आउटफ्लो
- डिविडेंड फंड्स: 59.21 करोड़ का आउटफ्लो
- संकेत देता है कि निवेशक टैक्स सेविंग या डिविडेंड आधारित रणनीतियों से हटकर ग्रोथ-ओरिएंटेड फंड्स की ओर बढ़ रहे।

डेट फंड्स से भारी निकासी

- 2.94 लाख करोड़ का आउटफ्लो, लिक्विड फंड्स सबसे ज्यादा प्रभावित
- मार्च में डेट म्यूचुअल फंड्स से कुल 2.94 लाख करोड़ की निकासी हुई, जो फरवरी के 42,106 करोड़ के रइनफ्लो उलट है।

सबसे ज्यादा निकासी इन कैटेगरी में

- लिक्विड फंड्स: 1.34 लाख करोड़ रुपये
- ओवरनाइट फंड्स: 40,227 करोड़ रुपये
- मनी मार्केट फंड्स: 29,206 करोड़ रुपये
- यह ट्रेंड अक्सर मार्च में देखा जाता है।

हाइब्रिड फंड्स में भी गिरावट

- मार्च में हाइब्रिड फंड्स से 16,538 करोड़ का आउटफ्लो हुआ, जबकि फरवरी में 11,983 करोड़ रुपये का इनफ्लो था।

इन कैटेगरी में आया पैसा?

- मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड्स : 5,212 करोड़ रुपये
- एग्रेसिव हाइब्रिड फंड्स: हल्का पॉजिटिव इनफ्लो

सबसे ज्यादा निकासी

- आर्बिट्राज फंड्स : 21,113 करोड़ रुपये
- इक्विटी सेविंग्स फंड्स: 1,131 करोड़ रुपये
- यह दर्शाता है कि निवेशक कम-रिटर्न वाले या जटिल प्रोडक्ट्स से दूरी बना रहे।

खबर संक्षेप

किसानों की समस्याओं का समाधान करें: शर्मा

नारनौल। इंडियन नेशनल लोकदल ने शनिवार को अनाज मंडी में स्थापित किसान कष्ट निवारण केंद्र का दौरा कर प्रदेश सरकार के नए खरीद नियमों के खिलाफ जोरदार विरोध दर्ज कराया। इनेलो के नेशनल पार्लियामेंट्री बोर्ड के सदस्य व पूर्व विधायक राधेश्याम शर्मा ने कहा कि सरकार किसानों की समस्याओं का समाधान करें। इनेलो की ओर से प्रदेशभर की मंडियों में किसान कष्ट निवारण केंद्र स्थापित किए गए हैं।

विश्वविद्यालय की टॉप 10 सूची पर यदुवंशी का कब्जा

महेंद्रगढ़। इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर रेवाड़ी द्वारा बीकॉम प्रथम सेमेस्टर का परीक्षा परिणाम घोषित किया गया, जिसमें यदुवंशी कॉलेज के बीकॉम प्रथम सेमेस्टर की छात्रा नेहा पुत्री महेश कुमार ने प्रथम स्थान हासिल किया, अहाना चिकना पुत्री मनोज कुमार ने दूसरा, मयंक पुत्री मनोज कुमार ने तीसरा, प्रिया पुत्री सुनील कुमार ने छठा, दिव्या पुत्री ईश्वर सिंह ने नौवा, हिना पुत्री संजय कुमार ने 10वां स्थान हासिल किया। संस्था चेयरमैन एवं पूर्व विधायक राव बहादुर सिंह ने कहा कि वाणिज्य विभाग का परीक्षा परिणाम अत्यंत उत्कृष्ट रहा है।

सभापति बनने पर रमेश खिंची को दी बधाई

मंडी अटेली। विधानसभा कठूमर (अलवर) के विधायक रमेश खिंची को अनुसूचित जाति कल्याण समिति का सभापति नियुक्त किए जाने पर अनुसूचित जाति मोर्चा भाजपा महेंद्रगढ़ की ओर से हर्ष व्यक्त करते हुए उन्हें हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी गईं। इस मौके पर कार्यकर्ताओं में खुशी का माहौल देखने को मिला और इसे समाज के लिए गौरवपूर्ण क्षण बताया गया। अनुसूचित जाति मोर्चा के जिला अध्यक्ष कर्मवीर खिंची, पूर्व मंडल अध्यक्ष कृष्ण शर्मा, अटेली मंडल अध्यक्ष मुकेश कुमार गनियार, बाबूलाल मुंडिया खेड़ा ने कहा कि रमेश खिंची के नेतृत्व में अनुसूचित जाति वर्ग के हितों को नई दिशा और मजबूती मिलेगी।

राजकीय महाविद्यालय में दीक्षांत समारोह 17 को

नारनौल। राजकीय महाविद्यालय में वार्षिक पारितोषिक एवं दीक्षांत समारोह का आयोजन 17 अप्रैल को किया जाएगा। महाविद्यालय के शैक्षणिक, सांस्कृतिक व खेलकूद प्रतियोगिताओं, एनसीसी, एनएसएस सहित अन्य गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विधायक ओमप्रकाश यादव होंगे। अध्यक्षता महाविद्यालय प्राचार्य राजवीर सिंह करेंगे।

तीन दिवसीय धार्मिक कार्यक्रम आज से

मंडी अटेली। अटेली क्षेत्र के गांव कांटी धाम स्थित प्राचीन मंदिर में श्रीश्री 1008 बाबा गणेशदास महाराज की कृपा से 12 से 14 अप्रैल तक भव्य धार्मिक आयोजन किए जाएंगे। जानकारी देते हुए ठाकुर जी मंदिर सेवा समिति ट्रस्ट के प्रधान हीरा सिंह ने बताया कि मूर्ति स्थापना, विशाल मेला एवं भंडारे का आयोजन होगा, जिसमें क्षेत्र सहित दूर-दराज से श्रद्धालुओं के पहुंचने की उम्मीद है। 12 अप्रैल को मंत्र जाप व मूर्ति स्नान, 13 अप्रैल को मूर्ति अभिषेक, नगर परिक्रमा, कलश यात्रा एवं रात्रि भजन-कीर्तन का कार्यक्रम होगा।

आंबेडकर जयंती पर स्वास्थ्य जांच शिविर 14 को

मंडी अटेली। श्रीराम सेवा ट्रस्ट गुजरवास के तत्वावधान में आंबेडकर जयंती के अवसर पर 14 अप्रैल को सेठ रामलाल हवेली गुजरवास में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया जाएगा। इस शिविर का शुभारंभ प्रमुख समाजसेवी विनय अग्रवाल द्वारा किया जाएगा। ट्रस्ट के प्रधान ओपी चौहान ने जानकारी देते हुए बताया कि शिविर में विभिन्न विशेषज्ञ डॉक्टर अपनी सेवाएं देंगे। इनमें डॉ. दिशा सत्पथी और डॉ. शुभम शर्मा (डेंटल सर्जन) सहित अन्य चिकित्सक शामिल रहेंगे।

जयंती पर महात्मा ज्योतिबा फुले को किया नमन

समाज सुधार व शिक्षा के क्षेत्र में फुले का रहा अमूल्य योगदान : सैनी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

नारनौल। महात्मा ज्योतिबा फुले को नमन करते हुए। फोटो : हरिभूमि

सिंघाना रोड बाईपास स्थित महात्मा ज्योतिबा फुले चौक पर महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती उत्साह के साथ मनाई गई। जिसकी शुरूआत महात्मा ज्योतिबा फुले की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर की गई। इस अवसर पर कार्यक्रम के आयोजक महात्मा ज्योतिबा फुले ब्रिगेड के संस्थापक गौतम सैनी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम में उपस्थित वक्ताओं ने महात्मा ज्योतिबा फुले के समाज सुधार व शिक्षा के क्षेत्र में दिए गए अमूल्य योगदान को याद करते हुए उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया।

जिला अध्यक्ष महिला मोर्चा एवं पूर्व अध्यक्ष नगर परिषद भारती सैनी ने महात्मा ज्योतिबा फुले के जीवन संघर्ष, सामाजिक समरसता व शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान को विस्तार से रखते हुए कहा कि उनके विचार आज भी समाज के लिए प्रेरणास्रोत हैं। उन्होंने सभी से आह्वान किया कि हम उनके बताए मार्ग पर चलकर समाज में समानता और भाईचारे को मजबूत करें। डॉ. रामनिवास मानव ने महात्मा ज्योतिबा फुले एवं सावित्रीबाई फुले के क्रांतिकारी कार्यों को याद किया और कहा कि उन्होंने समाज के वंचित वर्गों को शिक्षा से जोड़कर एक नई दिशा दी। दुलीचंद प्रधान ने एक प्रेरणादायक गीत के माध्यम से महात्मा ज्योतिबा फुले व सावित्रीबाई फुले के समाजहित में किए गए कार्यों को भावपूर्ण तरीके से प्रस्तुत किया। इस मौके पर पूर्व जिला बाल कल्याण अधिकारी विपिन शर्मा, रामनिवास मानव, सैनी सभा महासचिव निहाल सैनी, कार्यकारिणी सदस्य मदनलाल सैनी, पूर्व प्रधान सैनी सभा मोहर सिंह सैनी, भगवान दास सैनी, सैनी सभा पूर्व उपप्रधान ओमप्रकाश ठेकेदार, ऑल इंडिया सैनी सेवा समाज जयसिंह सैनी, भीमनरेश, मानसिंह सैनी, नवीन मास्टर, प्रेम मैनेजर, अरुण सैनी, अशोक सैनी, होशियार सिंह, रॉकी सैनी, सन्नी सैनी, पीयूष सैनी, अनिल कुमार सैनी, जिला सचिव कुसुम निर्मल, मंडल अध्यक्ष रितु शर्मा, विक्रम सैनी, विजय कुमार सैनी, संदीप सैनी, साहिल सैनी, अशोक सैनी, अजीत सैनी, प्रीतम सैनी, बिशन दयाल ठेकेदार, संदीप मास्टर, आशीष सैनी, प्रशांत, यक्षित सैनी आदि मौजूद थे।

नारनौल। महात्मा ज्योतिबा फुले के चित्र पर पुष्प अर्पित करते मुख्य अतिथि अतरलाल।

बसपा ने महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती मनाई

नारनौल। बहुजन समाज पार्टी के कार्यकर्ताओं ने अटेली में महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती धूमधाम से मनाई। कार्यकर्ताओं ने मिलन समारोह आयोजित कर उन्हें नमन किया। मुख्य अतिथि बसपा नेता अतरलाल ने ज्योतिबा फुले के चित्र पर पुष्प अर्पित कर समारोह का शुभारम्भ किया। समारोह की अध्यक्षता ब्लॉक प्रधान शेरसिंह यादव ने की। अतरलाल ने महात्मा ज्योतिबा फुले व सावित्रीबाई फुले को नमन करते हुए कहा कि महापुरुषों की जयंतियां लोगों में जागृति पैदा करती है। जिससे समाज में बदलाव आता है। उन्होंने महात्मा ज्योतिबा फुले को सामाजिक न्याय का अग्रदूत बताते हुए उनके विचारों को अपनाने की अपील की। उन्होंने हरियाणा सरकार से किसी एक विश्वविद्यालय का नाम महात्मा ज्योतिबा फुले के नाम पर करने की मांग की। शेरसिंह यादव ने महात्मा ज्योतिबा फुले के जन्मदिन को सामाजिक न्याय का बड़ा दिन बताते हुए कार्यकर्ताओं से सामाजिक न्याय के समर्थन में जन अभियान चलाने का सुझाव दिया। उनके इस सुझाव पर कार्यकर्ताओं ने मिलन समारोह में 14 अप्रैल डॉ. भीमराव अम्बेडकर के जन्मदिन से 45 दिन तक सामाजिक न्याय के समर्थन में जन अभियान चलाने का फैसला किया। जिसके अंतर्गत जिला के गांव, कस्बों, शहरों में महात्मा ज्योतिबा फुले तथा भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों बारे सभाएं, गोष्ठियां, सेमिनार, प्रदर्शन व मिलन समारोह आयोजित किए जाएंगे। इस मौके पर भागसिंह चेयरमैन, कैलाश सेठ, शेरसिंह यादव, भरतलाल सैनी, अशोक सिंह खोड़, जितेन्द्र सिंह, राकेश यादव, सुरेन्द्र सिंह, पवन प्रजापत, दानसिंह प्रजापत, पदम सिंह आदि मौजूद थे।

मंडी अटेली। जनसभा में मंच पर उपस्थित मुख्य अतिथि व अन्य। फोटो : हरिभूमि

अटेली में फुले-अंबेडकर जयंती पर जनसभा में शिक्षा औरसामाजिक जागरूकता पर जोर

मंडी अटेली। राष्ट्रीय बौद्ध महासभा व सावित्रीबाई ज्योतिबा फुले फाउंडेशन नारनौल के संयुक्त तत्वावधान में अटेली मंडी में महात्मा ज्योतिबा फुले व डॉ. भीमराव अंबेडकर के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में एक जनसभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. सीमा खड़िया ने शिरकत की, जबकि अध्यक्षता प्रदेश अध्यक्ष शेरसिंह ने की।

इस मौके पर मुख्य अतिथि डॉ. सीमा खड़िया ने कहा कि ज्योतिबा फुले ने शिक्षा के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाया और समाज में फैली कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने कहा कि आज महिलाएं हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं, जिसका श्रेय शिक्षा को जाता है। उन्होंने शिक्षा के व्यवसायीकरण पर चिंता जताते हुए इसे समाज के लिए घातक बताया। कार्यक्रम में वक्ताओं ने महापुरुषों के विचारों को अपनाने और उन्हें व्यवहार में उतारने की आवश्यकता पर बल दिया। राष्ट्रीय बौद्ध महासभा के पदाधिकारियों ने कहा कि केवल जयंती मनाने से समाज का विकास संभव नहीं, बल्कि उनके विचारों को जीवन में अपनाना जरूरी है। इस दौरान कविताएं, रागिनी व सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से भी संदेश दिया गया। बाल कलाकारों व प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। वक्ताओं ने युवाओं को नशे से दूर रहकर महापुरुषों के आदर्शों पर चलने का आह्वान किया।

महेंद्रगढ़। प्रतिमा पर पुष्पार्पित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

सैनी हाई स्कूल में मनाई ज्योतिबा फुले की जयंती

महेंद्रगढ़। सैनी सभा के तत्वावधान में शनिवार को सैनी हाई स्कूल परिसर में समाज सुधारक महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती मनाई गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता सैनी सभा के प्रधान सुरेश सैनी ने की। इस अवसर पर उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने महात्मा फुले की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी। सभी उपस्थितजनों ने उनके बताए मार्ग पर चलने और शिक्षित व संगठित समाज निर्माण का संकल्प लिया। सभा प्रधान सुरेश सैनी ने महात्मा ज्योतिबा फुले के जीवन और उनके संघर्षों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महात्मा ज्योतिबा फुले एक महान भारतीय समाज सुधारक, क्रांतिकारी विचारक और मानवता के सच्चे सेवक थे, जिन्होंने अपना पूरा जीवन ऊंच-नीच के भेदभाव को मिटाने में समर्पित कर दिया। उन्होंने समाज के वंचित और पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए सत्यशोधक समाज की स्थापना की, जिसका उद्देश्य शोषितों को न्याय और अधिकार दिलाना था। कार्यक्रम में पहुंचे मार्केट कमेटी वाइस चेयरमैन कृष्ण सैनी ने शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान की सराहना करते हुए कहा कि महात्मा ज्योतिबा फुले देश में शिक्षा की अलख जगाने वाले अग्रदूत थे।

नारनौल। महात्मा ज्योतिबा फुले को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

ज्योतिबा फुले ने शिक्षा व सशक्तिकरण में निभाई अहम भूमिका

नारनौल। महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती का आयोजन सर्व अनुसूचित जाति संघर्ष समिति के तत्वावधान निजी मैरिज प्लेस में किया गया। जिसकी अध्यक्षता समिति के प्रधान चन्दन सिंह जालवान ने की। समिति महासचिव एवं कबीर सामाजिक उत्थान संस्था दिल्ली के वाइस चेयरमैन बिरदीचंद गोठवाल ने कहा कि ज्योतिबा फुले ने जातिगत भेदभाव, छुआछूत, महिला शिक्षा व सशक्तिकरण में अहम भूमिका निभाई। प्रमुख सलाहकार लालाराम नाहर, गुरु रविदास सभा के पूर्व प्रधान हरिसिंह बड़कोदिया, परिवर्तनकारी साहित्य मंच के अध्यक्ष एवं पूर्व प्राचार्य डॉ. शिवताज सिंह, पूर्व चीफ मैनेजर मदनलाल डाडैया, साहित्यकार भूपसिंह भारती, रिटायर्ड कर्मचारी संघ के पूर्व प्रधान डॉ. ओमप्रकाश दायमा, मुख्य प्रवक्ता एवं हरियाणा प्रदेश चमार महासभा के प्रधान अनिल फांडन, कोषाध्यक्ष प्यारेलाल चवन आदि ने महात्मा फुले के जीवन पर प्रकाश डाला। इस मौके पर महर्षि वाल्मीकि सभा के सदस्य एवं समिति के उपाध्यक्ष राजेश चांवरिया, कोली समाज के प्रधान तोताराम, प्रधान जयपाल, सचिव सुमेर सिंह गोठवाल, खण्ड प्रधान किशनलाल, पूर्व प्रधान प्रभुदयाल, पूर्व अधीक्षक दयानंद सांवरिया आदि मौजूद थे।

नारनौल। महात्मा ज्योतिबा फुले को नमन करते हुए। फोटो : हरिभूमि

सैनी सभा ने महात्मा ज्योतिबा फुले जयंती मनाई

नारनौल। सैनी सभा परिसर में महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती श्रद्धा के साथ मनाई गई। इस अवसर पर समाज के सभी गणमान्य व्यक्तियों व वरिष्ठजनों ने महात्मा फुले के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया तथा उनके आदर्शों को अपनाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में सैनी सभा के महासचिव निहाल सैनी ने कहा कि महात्मा ज्योतिबा फुले एक महान समाज सुधारक थे, जिन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों, छुआछूत और भेदभाव के खिलाफ आजीवन संघर्ष किया। उन्होंने शिक्षा को समाज के उत्थान का सबसे प्रभावी माध्यम बताया और विशेष रूप से महिलाओं व वंचित वर्ग के लिए शिक्षा के द्वार खोलने का ऐतिहासिक कार्य किया। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे महात्मा फुले के जीवन से प्रेरणा लेकर समाजसेवा में आगे आएं और एक सशक्त समाज के निर्माण में अपनी भूमिका निभाएं। इस मौके पर सचिव भारत सैनी, कोषाध्यक्ष बलवंत सैनी, पूर्व कोषाध्यक्ष रामजीलाल सैनी, कार्यकारिणी सदस्य मदनलाल सैनी, जिलाध्यक्ष राष्ट्रीय सैनी सभा संजय सैनी, जिला उपाध्यक्ष राष्ट्रीय सैनी सभा राजेश सैनी, संदीप सैनी, पूर्व सचिव सतीश सैनी, पूर्व उपप्रधान ओमप्रकाश सैनी आदि मौजूद थे।

कनीना। विद्यार्थियों को पारितोषिक वितरित करते चेयरमैन जगदेव यादव।

साइंस ओलम्पियाड में छाए एसडी ककराला के विद्यार्थी

कनीना। एसडी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ककराला ने साइंस ओलम्पिया फाउंडेशन की पहले चरण की परीक्षा में राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पुनः अमिट छाप छोड़ी है। इस परीक्षा में अंग्रेजी विषय के प्रथम चरण में कुल 151 विद्यार्थी पहुंचने में कामयाब रहे हैं। जिसमें 42 विद्यार्थियों को आउट स्टेन्डिंग मेडल, 93 विद्यार्थियों को अक्सीलैंस सर्टिफिकेट व 16 विद्यार्थियों को गोल्ड मेडल प्राप्त हुए। विद्यालय की प्रधानाचार्या शिप्रा सारस्वत ने सभी प्रतिभागियों को सतत मेहनत करते हुए इस प्रकार की प्रतियोगिताओं को विद्यार्थियों के सर्वांगिण विकास व नई शिक्षा नीति का महत्वपूर्ण हिस्सा बताते हुए विद्यार्थियों को इस प्रकार की प्रतियोगिताओं में बढ़ चढ़कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया। विद्यालय के चेयरमैन जगदेव यादव ने विजेता विद्यार्थियों को पारितोषिक वितरित किया।

आरपीएस में ऑल इंडिया ओलंपियाड के विजेताओं को किया सम्मानित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

आरपीएस ग्रुप द्वारा आयोजित प्रतिष्ठित सातवें ऑल इंडिया आरपीएस ओलंपियाड के दूसरे चरण का परिणाम घोषित होने के बाद पारितोषिक वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में आए मेधावी छात्र-छात्राओं को उनकी शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए नकद पुरस्कार से नवाजा गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्यातिथि चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव द्वारा मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। डॉ. पवित्रा राव ने कहा कि वर्तमान समय में अभिभावक शिक्षा और संस्कारों को लेकर अत्यधिक जागरूक हैं, जो एक बेहतर समाज के लिए सुखद संकेत है। ग्रुप सीईओ इंजी. मनीष राव ने ओलंपियाड के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारा लक्ष्य बच्चों की छिपी हुई प्रतिभा को पहचान कर उन्हें राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए मानसिक रूप से तैयार करना है। वहीं, डिप्टी सीईओ कुणाल राव और प्राचार्य डॉ. किशोर तिवारी ने विजेताओं को बधाई दी और आरपीएस ग्रुप की प्रतिबद्धता दोहराई।

सूरज स्कूल में राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रशिक्षण शिविर आयोजित

महेंद्रगढ़। सूरज स्कूल में शिक्षकों के सतत क्षमता विकास के लिए शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण शिविर में राष्ट्रीय शिक्षा नीति विषय के बारे में शिक्षकों को अवगत कराया गया। सीबीएसई बोर्ड द्वारा अधिकृत प्रशिक्षकों डॉ. निर्मल पोकली और पूजा ने इस प्रशिक्षण शिविर में राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर प्रशिक्षण दिया। इसमें विद्यालय के सभी अध्यापकों ने भाग लिया। यह प्रशिक्षण केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से संबद्ध सभी विद्यालयों के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुपालन में आवश्यक है। इस प्रशिक्षण में प्रशिक्षकों ने शिक्षा नीति में किए गए बदलावों पर चर्चा की तथा साथ ही बताया कि नई शिक्षा नीति को लागू करने के लिए शिक्षण पद्धतियों में भी बदलाव की आवश्यकता है। विद्यालय निदेशक संदीप प्रसाद ने कहा कि वर्तमान समय में शिक्षक को केवल पढाने वाला नहीं, बल्कि एक मेंटर और फैसिलिटेटर बनना चाहिए।

महेंद्रगढ़। प्रशिक्षण शिविर में उपस्थित शिक्षक। फोटो : हरिभूमि

केंद्र के रक्षा, वित्त व स्वास्थ्य मंत्री को लिखा पत्र

ईसीएचएस पॉली क्लीनिक भवन निर्माण की जल्द मिले मंजूरी

भूतपूर्व सैनिकों, केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल व केंद्रीय कर्मियों की सुविधा के लिए सांसद ने की पैरवी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

भिवानी–महेंद्रगढ़ सांसद चौधरी धर्मबीर सिंह ने भूतपूर्व सैनिकों, सशस्त्र पुलिस बलों केंद्रीय कर्मियों की विभिन्न सुविधाओं के लिए पैरवी की है। इस बारे में अधिक जानकारी देते हुए विकास एवं निगरानी समिति सदस्य संदीप ने बताया कि बजट प्रस्ताव 2026 में भूतपूर्व सैनिकों को मिलने वाली निःशक्ता (डिसेबिलिटी) पैंशन को टैक्स के दायरे मे लाया गया है। इसे लेकर भूतपूर्व सैनिकों के एक संगठन ने सांसद धर्मबीर सिंह के सामने इस प्रस्ताव को निरस्त करवाने बारे निवेदन किया था। सांसद ने उनकी मांग पर अपनी सैद्धांतिक सहमति जताते हुए केन्द्रीय रक्षा एवं वित्त मंत्री को पत्र लिखकर निवेदन किया है कि भूतपूर्व सैनिकों को मिलने वाली निःशक्ता (डिसेबिलिटी) पेंशन को टैक्स के दायरे से बाहर रखा जाए। अपने पत्र में सांसद ने कहा है कि बजट प्रस्ताव के पृष्ठ संख्या 88, पैरा 108 में इस पैंशन को टैक्स के दायरे में रखने की बात कही गई है। भूतपूर्व सैनिकों के प्रति अपनी कृतज्ञता के रूप में सन- 1922 से ही ये पैंशन टैक्स फ्री रही है।

वर्तमान बजट में इस पर टैक्स लगाने के प्रस्ताव को निरस्त किया जाना चाहिए। आशा है इस पर सकारात्मक एवं सहानुभूति पूर्वक निर्णय लिया जाएगा। इसके साथ-साथ नारनौल में ईसीएचएस के क्लीनिक के लिए जगह सुनिश्चित कर रखी है। परंतु ईसीएचएस पॉली क्लीनिक का भवन न होने की वजह से ये वर्तमान में गांव नीरपुर में एक किराए के भवन में चल रहा है।

भूतपूर्व सैनिकों को होगी बहुत सुविधा

सांसद ने लोक निर्माण विभाग के कार्यकारी अभियंता को इसका एस्टीमेट भेजने का निर्देश दिया था। जिस पर इसके भवन निर्माण का एस्टीमेट ईसीएचएस अथॉरिटी अलवर को भेज दिया गया है। सांसद ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को पत्र लिखकर इस एस्टीमेट को जल्द-से-जल्द मंजूर करने का अनुरोध किया है। उन्होंने बताया कि कैन्टीन के निकट ही इस ईसीएचएस भवन का निर्माण होना है। इस भवन के निर्माण से भूतपूर्व सैनिकों को बहुत सुविधा होगी। इसके निर्माण के लिए 2.07 करोड़ का एस्टीमेट भिजवाया गया है। इसके अंतर्गत पॉली क्लीनिक भवन की चारदिवारी, कमरे, बाथरुम व सेप्टिक टैंक आदि का निर्माण होना है। इसके साथ-साथ सांसद धर्मबीर सिंह ने केन्द्रीय कर्मियों एवं उनके परिवारों की सुविधा के लिए जिला महेंद्रगढ़ में एक सीजीएचएस हेल्थ क्लीनिक खोलने की भी मांग की है। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री को लिखे अपने पत्र में सांसद धर्मबीर सिंह ने कहा है कि जिला महेंद्रगढ़ में हजारों केन्द्रीय कर्मी हैं। यदि सीजीएचएस क्लीनिक खुलता है तो इनके परिवारों को सामान्य बीमारी के इलाज में होने वाले खर्च से राहत मिलेगी। वर्तमान में सीजीएचएस कार्ड की सुविधा गंभीर बिमारी में केवल भर्ती होने की सूरत में ही मिलती है। सीजीएचएस हेल्थ क्लीनिक खुलने से सामान्य बिमारी में भी वहां मुफ्त उपचार की सुविधा मिल जाएगी।

न्यूनतम मजदूरी व पीपीपी आय सीमा पर सरकार दे स्पष्टीकरण: छिलरो

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

जननायक जनता पार्टी के जिला प्रवक्ता विजय छिलरो ने प्रदेश सरकार की नीतियों पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि प्रदेश में न्यूनतम मजदूरी को लेकर सरकार खुद ही भ्रम की स्थिति पैदा कर रही है। सरकार ने हरियाणा में कम से कम मासिक मजदूरी 15220 रुपये व अधिकतम 18264 रुपये तय की है। जिसका स्वागत करते है, लेकिन सरकार स्थिति को स्पष्ट करे, अगर इसका सालाना हिसाब लगाया जाए तो यह लगभग 182640 रुपये से लेकर 219168 रुपये तक बैठता है। छिलरो ने सरकार से सवाल करते हुए कहा कि सरकार स्पष्ट करे कि यह आय परिवार पहचान पत्र में आय के रूप में जोड़ी जाएगी या नहीं। सरकार ने पीपीपी में 18000 रुपये मासिक आय की सीमा तय कर रखी है। ऐसे में अगर न्यूनतम मजदूरी को ही आय माना गया, तो प्रदेश के हजारों गरीब व मजदूर परिवार बीपीएल श्रेणी से बाहर हो जाएंगे, जिससे उन्हें मिलने वाली सरकारी योजनाओं व सुविधाओं से वंचित होना पड़ेगा। सरकार की नीतियां गरीब और मजदूर वर्ग के लिए गंभीर चिंता का विषय बन चुकी हैं। सरकार को तुरंत इस मामले में स्पष्ट नीति लाकर जनता को भरोसा दिलाना चाहिए कि गरीबों के अधिकारों पर किसी प्रकार की चोट नहीं की जाएगी।

सीएम ने प्रति परिवार 30-30 लाख रुपये देने की घोषणा की

फरीदाबाद अग्निकांड में मारे गए दो फायर कर्मियों को शहीद का दर्जा एवं एक-एक करोड़ मुआवजा देने की मांग, दो दिन और बढ़ी हड़ताल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

फरीदाबाद अग्निकांड में मारे गए दो फायर कर्मियों को शहीद का दर्जा एवं एक-एक करोड़ की आर्थिक सहायता दिलाने की मांग को लेकर फायer कर्मियों का धरना-प्रदर्शन चौथे दिन भी जारी रहा। हड़ताली कर्मचारियों ने स्टेट बॉडी के आदेशानुसार इस विरोध प्रदर्शन को दो दिन और बढ़ाने का निर्णय लिया है। अब यह दूसरी बार दो दिन की बढ़ोतरी की गई है। वहीं दूसरी ओर प्रदेश के सीएम नायब सिंह सैनी ने दो फायर कर्मियों की ड्यूटी के दौरान दुखद मौत होने पर उन्हें 30-30 लाख रुपये प्रति परिवार राशि देने की घोषणा कर दी है। साथ ही इंश्योरेंस का पैसा दिलाने के प्रयास करने का भी आश्वासन दिया है। परिवार के एक-एक सदस्य को एचकेआरएन के तहत नौकरी देने का भी आश्वासन दिया है।

- कर्मियों का धरना-प्रदर्शन चौथे दिन भी रहा जारी

सीएम ने इंश्योरेंस का पैसा दिलाने व परिवार के एक-एक सदस्य को एचकेआरएन के तहत नौकरी देने का भी आश्वासन दिया

यदि जल्द समाधान नहीं निकला तो सभी विभागों के साथ मिलकर रोडवेज का चक्का जाम करने की चेतावनी दी

नारनौल। धरना देते अग्निशमन विभाग के दमकल कर्मी। फोटो : हरिभूमि

फायर कर्मचारियों की हड़ताल को रोडवेज यूनियन से मिला समर्थन

प्रधान गुरदयाल सिंह ने बताया कि फायर कर्मचारियों की हड़ताल को रोडवेज यूनियन से समर्थन मिला है। फतेहाबाद में आयोजित बैठक में यूनियन ने सरकार की नीतियों का विरोध करते हुए कहा कि दमकल कर्मियों की मांगें जायज हैं और उनका दमन बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। चेतावनी दी कि यदि जल्द समाधान नहीं निकला तो सभी विभागों के साथ मिलकर रोडवेज का चक्का जाम किया जाएगा। बैठक में दमकल कर्मचारियों की प्रमुख मांगों में शहीद कर्मचारियों के परिवारों को मुआवजा, पक्की नौकरी, जोखिम भत्ता और पुरानी पेंशन बहाली शामिल हैं। इस मौके पर उपप्रधान दिनेश कुमार, हवासिंह, विक्रम जोया, संदीप, लीलाराम, आशीष, विनित, अशोक, हरिओम, रविकांत, अनिल कुमार, इंद्रसिंह, अजय, संजय एवं सुभाष आदि मौजूद रहे।

प्रधान ने क्रांतिकारियों को सैल्यूट किया

नगर परिषद परिसर में दिए जा रहे धरने को संबोधित करते हुए प्रधान गुरदयाल सिंह ने कहा कि स्टेट बॉडी ने प्रदेश में जहां भी इस मांग को लेकर धरने प्रदर्शन चल रहे हैं, उन सभी क्रांतिकारियों को अपनी तरफ से सैल्यूट किया है। उन्होंने बताया कि सभी कर्मचारी मिलकर लगातार अपने-अपने फायर स्टेशनों पर पक्का मोर्चा लगाकर अपने शहीद भाइयों को न्याय दिलाने, अपनी ज्वलंत मांगों के लिए संघर्ष कर रहे हो और ये संघर्ष तब तक जारी रहेगा, जब तक हमारी मांगों का पक्का समाधान नहीं हो जाता। उस वक्त तक हम आगे कोई छुट्टी नहीं करेंगे, चाहे कोई संडे हो या कोई त्यौहार। प्रधान ने बताया कि हरियाणा अग्निशमन विभाग कर्मचारी यूनियन ने इस हड़ताल को आगे 12 व 13 अप्रैल तक दो दिन के लिए बढ़ाने का ऐलान कर किया है। जब तक हमारी मांगों का पूरी तरह से समाधान नहीं हो जाता, तब तक इस हड़ताल को बिल्कुल भी वापस नहीं लेंगे। उन्होंने कहा कि सरकार पूरी तरह से दबाव में है, लेकिन सरकार भी हमारे ऊपर हड़ताल खत्म करवाने के लिए किसी तरह का दबाव भी बना सकती है, पर हम लगातार संघर्ष करते रहेंगे।

खबर संक्षेप

रूची का रक्षा मंत्रालय में एएसओ पद पर चयन

नांगल चौधरी। सिरोही बहाली की बेटी रूची कुमारी पुत्री रमेश कुमार ने सीजीएल परीक्षा को क्वालिफाई किया। एसएससी की मेरिट रिपोर्ट के आधार पर चयनित छात्रा को रक्षा मंत्रालय में एएसओ पद पर नियुक्ति दी गई है। ग्रामीणों ने मेधावी छात्रा के सम्मान में समारोह आयोजित करने का निर्णय लिया है। चयनित एएसओ रूची कुमारी के चाचा मनरूप मास्टर ने बताया कि पढ़ाई में शुरू से ही अव्वल रही है। बीते साल अगस्त महीने में सीजीएल की प्री परीक्षा दी थी, जिसमें उत्तीर्ण होने के बाद एसएससी ने मैन परीक्षा के लिए कॉल किया। बीते साल आयोजित हुई परीक्षा का परिणाम एसएससी ने घोषित कर दिया। जिसमें रूची कुमारी को मिली टॉप रैंक के आधार पर रक्षा मंत्रालय में एएसओ का दायित्व दिया गया है।

कार की टक्कर से बाइक सवार भाई-बहन घायल

नारनौल। रेवाड़ी रोड पर सीएल फॉर्म के पास रॉन्ग साइड से आई एक कार ने बाइक को टक्कर मार दी, जिससे बाइक सवार भाई-बहन गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जबकि पुलिस ने कार ड्राइवर के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। गांव बजाड़ के एक युवक ने बताया कि वह बीती शाम साढ़े सात बजे बहन को बाइक पर लेकर खालड़ा हनुमान मंदिर से अपने गांव जा रहा था। जब वह सीएल फॉर्म के पास पहुंचा तो सामने से आई कार ने बाइक को टक्कर मार दी।

बारिश होने पर वाहन चालकों को दिखाई नहीं देते गड्ढे

अलवर-खेतड़ी राजमार्ग गड्ढों में तबदील एक साल में तीन बाइक सवारों की मौत

डंपरों के प्रेशर हॉर्न से ग्रामीणों को मानसिक व शारीरिक समस्या उत्पन्न होने का बना खतरा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नांगल चौधरी

नांगल चौधरी। नायन बस स्टैंड के पास क्षतिग्रस्त सड़क मार्ग। फोटो : हरिभूमि

अलवर-खेतड़ी राजमार्ग की बदहाल स्थिति ने वाहन चालकों व दैनिक यात्रियों की चिंता बढ़ा दी है। जगह-जगह गहरे गड्ढों में तब्दील हो चुकी यह सड़क खासकर बाइक सवारों के लिए जानलेवा साबित हो रही है। बीते एक वर्ष में इस मार्ग पर तीन लोगों की मौत हो चुकी है, साथ ही चार वाहन पलट चुके हैं। जिनमें जानलेवा हादसा नहीं हुआ, लेकिन वाहनों को भारी नुकसान हुआ है। चिंतित ग्रामीण जिला प्रशासन से सड़क रिपेयर की गुहार लगा चुके हैं। इसके बावजूद स्थिति यथावत बनी हुई है।

पूर्व जिला पार्षद छत्रपाल रावत, बिक्रम सिंह, अशोक कुमार, महेश चौधरी, रामरतन ने बताया कि यह सड़क दिल्ली और फरीदाबाद तक पहुंचने का एक महत्वपूर्ण शॉर्टकट मार्ग है, जिस कारण यहां भारी वाहनों, विशेषकर ओवरलोड डंपरों का आवागमन लगातार बढ़ गया है। स्थिति यह है कि रात के समय 15 से 20 डंपर कतारबद्ध होकर चलते हैं, जिससे छोटे वाहन चालकों के लिए रास्ता बेहद खतरनाक बन जाता है। अंधेरे व खराब सड़क के कारण दुर्घटनाओं की आशंका कई गुना बढ़ जाती है। अलवर से खेतड़ी तक इस राजमार्ग का चौड़ीकरण करीब पांच साल पहले किया गया था। इसके बाद दो बार इसकी मरम्मत भी कराई जा चुकी है, लेकिन भारी और ओवरलोड वाहनों के दबाव के कारण सड़क कुछ ही महीनों में फिर से खराब हो जाती है। ऐसे में सड़क की गुणवत्ता और निर्माण कार्य पर भी सवाल उठने लगे हैं। इस गंभीर समस्या से कई बार संबंधित विभागीय अधिकारियों को अवगत कराया है, लेकिन अब तक न तो सड़क की मरम्मत का कोई ठोस कार्य शुरू हुआ है और न ही ओवरलोड वाहनों के खिलाफ कोई प्रभावी कार्रवाई की गई है। इससे लोगों में प्रशासन के प्रति नाराजगी साफ देखी जा रही है।

टाइलें बिछाकर की रिपेयर, एक रात में टूटी

ग्रामीणों ने बताया कि नायन बस स्टैंड के पास गड्ढों की समस्या से विभागीय अधिकारियों को अवगत कराया गया था। दबाव बढ़ने पर विभाग ने इंटरलॉक टाइलें बिछाकर गड्ढों की रिपेयर करवा दी थी, लेकिन ओवरलोड डंपरों का दबाव पड़ने से टाइलें एक रात में ही बिखर गई। ग्रामीणों ने उच्च क्षमता वाली सड़क निर्माण कराने व ओवरलोड वाहनों पर अंकुश लगाने की गुहार लगाई है।

घरों का पानी सड़क पर छोड़ने से बनी जर्जर स्थिति

पीडब्ल्यूडी विभाग के एसडीओ नरेंद्र सिंह ने बताया कि नायन के पास इंटरलॉक टाइलें बिछाकर टूटी सड़क की रिपेयर कर दी थी, लेकिन अब घरों का पानी आने से दूसरी जगह से सड़क टूटनी आरंभ हो गई है। यह सड़क मार्ग अभी वारंटी पीरियड में है, तो ठेकेदार को पेचवर्क के लिए निर्देश जारी कर दिए हैं। बारिश रूकते ही सर्वे करवाकर रिपेयर करवा दी जाएगी। उन्होंने बताया कि सड़क पर पानी छोड़ने वाले व्यक्ति को नोटिस दे दिया है, जल्द ही अमल नहीं हुआ तो विभागीय कार्रवाई करेंगे।

जर्जर हवेली तोड़ने का कार्य शुरू, वार्ड वासियों ने ली राहत

कनीना। वार्ड चार में स्थित जर्जर हवेली। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कनीना

वार्ड चार में स्थित पुरानी एवं जर्जर हवेली को तोड़ने का कार्य नपा की ओर से शुरू किए जाने पर नागरिकों ने राहत की सांस ली है। इस पुरानी इमारत को आखिरकार प्रशासन की ओर से ध्वस्त कर दिया गया। नपा चेयरपर्सन डॉ. रिंपी लोढ़ा ने बताया कि यह इमारत लंबे समय से लोगों के लिए खतरे का कारण बनी हुई थी। वर्षों से उपेक्षित इस भवन की दीवारें कमजोर हो चुकी थी और कई बार इसके हिस्से गिरने की घटनाएं भी सामने आई थी, जिससे आसपास रहने वाले लोग हमेशा भय के साए में जी रहे थे। स्थानीय नागरिकों के अनुसार इमारत के गिरने का खतरा विशेष रूप से बारिश के मौसम में और बढ़ जाता था। कई बार प्रशासन को इसकी शिकायत भी दी गई थी, लेकिन कार्रवाई में देरी होने के कारण लोगों में नाराजगी भी थी। हालांकि अब जब इस इमारत तोड़ने का कार्य शुरू कर दिया गया है, जिसे क्षेत्र के निवासियों ने इसे एक बड़ी राहत के रूप में देखा है। नगरवासियों का कहना है कि इस कदम से न केवल संभावित दुर्घटनाओं का खतरा टल गया है, बल्कि इलाके की साफ सफाई और सुंदरता में भी सुधार होगा। नपा सचिव कपिल कुमार ने बताया कि यह कार्रवाई सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए की गई है। उन्होंने नागरिकों से भी अपील की है कि वे अपने आसपास किसी भी खतरनाक या क्षतिग्रस्त भवन की सूचना समय पर दें, जिससे समय रहते आवश्यक कदम उठाए जा सकें।

आयकर विभाग में तनिष्क सोनी बने अधीक्षक, किया सम्मानित

- तनिष्क की उपलब्धि युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत : डॉ. शर्मा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

तनिष्क सोनी पुत्र नरोत्तम सोनी व रवीना सोनी का सीजीएल परीक्षा उत्तीर्ण कर भारत सरकार के आयकर विभाग में अधीक्षक के रूप में चयन होने पर प्रगतिशील शिक्षक ट्रस्ट की ओर से उनका अभिनंदन किया गया। ट्रस्ट के सदस्य ओशीन शुक्ला व दिनेश कुमार ने बताया कि अध्यक्ष डॉ. संजय शर्मा के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने कल देर शाम मोहल्ला फ्रांसखाना निवासी स्व. मदनलाल सोनी के पौत्र तनिष्क के निवास पर पहुंचकर उन्हें इस उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए बधाई दी और सम्मानित किया। ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ. संजय शर्मा ने कहा कि यह उपलब्धि केवल तनिष्क की व्यक्तिगत सफलता नहीं, बल्कि समाज के युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने कहा कि निरंतर परिश्रम, अनुशासन और सही मार्गदर्शन से कठिन से कठिन लक्ष्य भी प्राप्त किया जा सकता है। डॉ. शर्मा ने तनिष्क के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि वे निष्ठा और ईमानदारी के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करें। ट्रस्ट के संरक्षक डॉ. जितेन्द्र भारद्वाज ने कहा कि प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में सफलता के लिए धैर्य और निरंतरता अत्यंत आवश्यक है।

फर्जी पेमेंट एप से ट्रांसफर का झांसा देकर नकदी ठगने वाले गिरफ्तार

- साइबर क्राइम थाना पुलिस ने दो शातिर आरोपितों को दबोचा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

जिले की साइबर क्राइम थाना पुलिस ने एक बड़ी सफलता हासिल करते हुए फर्जी पेमेंट ऐप के जरिए आमजन को विश्वास में लेकर उनसे नकदी ऐंठने वाले दो शातिर आरोपितों को गिरफ्तार किया है। जिनकी पहचान जितेंद्र वासी गुवानी व विकास वासी खातोली जाट के रूप में हुई है।

इन आरोपितों ने हाल ही में कई लोगों को अपना शिकार बनाया था, जिनमें छुट्टी पर आया आईटीबीपी का एक जवान भी शामिल था। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए दोनों आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया है और उनके पास से वारदात में इस्तेमाल किए गए मोबाइल फोन भी बरामद किए हैं। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि आरोपित नशे के आदी हैं।

आरोपितों ने 2000 रुपये देने का किया आग्रह

गांव हसनपुर निवासी बलबीर सिंह ने साइबर क्राइम थाना में शिकायत दी, जिसमें बताया कि वह आईटीबीपी में कार्यरत है और नौ अप्रैल की दोपहर करीब 2:30 बजे रेडक्रॉस भवन के पास उसके एक रिश्तेदार का इंतजार कर रहा था। इसी दौरान दो युवक उसके पास आए और मजबूरी का हवाला देते हुए कहा कि उन्हें कोई फीस भरनी है, लेकिन उनके पास नकद रुपये नहीं हैं। उन्होंने शिकायतकर्ता से 2000 रुपये नकद देने का आग्रह किया और बदले में उनके फोन पे पर ऑनलाइन पैसे ट्रांसफर करने का झांसा दिया। शिकायतकर्ता ने उन्हें 2000 रुपये नकद दे दिए। इसके बाद एक आरोपित ने फोन में शिकायतकर्ता का मोबाइल नंबर डालकर फर्जी ऐप के जरिए पैसे भेजने की झूठी स्क्रीन दिखाई और असली जैसी ही नोटिफिकेशन की आवाज भी सुनाई। आरोपितों के जाने के बाद जब पीड़ित ने अपना बैंक खाता और फोन की हिस्ट्री चेक की, तो रुपये न आने पर उसे अपने साथ हुई 2000 रुपये की ठगी का अहसास हुआ।

बलाहा कला पीएचसी में एचपीवी वैक्सीनेशन अभियान की शुरुआत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

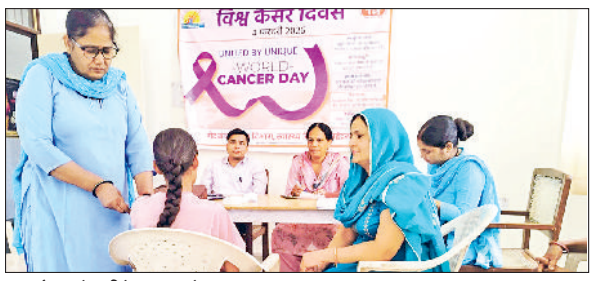

नारनौल। वैक्सीनेशन करते हुए। फोटो : हरिभूमि

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बलाहा में एचपीवी (ह्यूमन पैपिलोमा वायरस) वैक्सीनेशन अभियान की शुरुआत की गई। इस अभियान का उद्देश्य बालिकाओं को सर्वाइकल कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से बचाव के लिए जागरूक करना और समय पर टीकाकरण सुनिश्चित करना है। पीएचसी बलाहा के मेडिकल ऑफिसर डॉ. निखिल बहल ने बताया कि एचपीवी वायरस महिलाओं में होने वाले सर्वाइकल कैंसर का मुख्य कारण है। उन्होंने कहा कि 9 से 14 वर्ष की आयु वर्ग की बालिकाओं को यह टीका प्राथमिकता के आधार पर लगाया जा रहा है। डॉ. निखिल बहल ने अभिभावकों से अपील की कि वे अपनी बेटियों को इस महत्वपूर्ण वैक्सीनेशन से अवश्य जोड़ें, ताकि भविष्य में गंभीर बीमारियों के खतरे को कम किया जा सके। अभियान के दौरान स्वास्थ्य कर्मियों द्वारा लोगों को एचपीवी संक्रमण, इसके दुष्प्रभाव और बचाव के उपायों के बारे में विस्तार से जानकारी दी जा रही है।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
महेन्द्रगढ़ :- हरिभूमि कार्यालय, हुड्डा पार्क के सामने, डाक्टर भगत डैंटल अस्पताल वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, महेंद्रगढ़।
नारनौल :- सत्य प्लाजा, प्रथम तल, तरूण कलर लैब वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, नारनौल
फोन : 8295738500, 9253681005

अटेली में हरियाणा कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने सरकार को घेरा

क्रॉस वोटिंग करने वाले विधायकों पर अनुशासन समिति करेगी कार्रवाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶ मंडी अटेली

मंडी अटेली। प्रेस कॉन्फ्रेंस करते कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह।

कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह ने शनिवार को कांग्रेस के वरिष्ठ नेता महेंद्र सिंह रातां के कार्यालय में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस कर प्रदेश सरकार का घेराव किया। प्रदेश अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह ने कहा कि हरियाणा सरकार खुद को डबल इंजन की सरकार बताती है, लेकिन किसानों की समस्या का समाधान नहीं कर पा रही।

उन्होंने हाल ही में हुए राज्यसभा चुनाव में हुई क्रॉस वोटिंग के मुद्दे पर भी उन्होंने कड़ा रुख दोहराया। जिन विधायकों ने पार्टी के खिलाफ जाकर मतदान किया है, उनके खिलाफ रिपोर्ट तैयार कर ली गई है और मामला पार्टी हाईकमान को भेज दिया गया है।

उन्होंने स्पष्ट किया कि अनुशासन समिति इस मामले में कार्रवाई करेगी और जल्द ही इसका परिणाम सामने आएगा। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा ने प्रलोभन, दबाव के जरिए कांग्रेस के पांच वोटों की क्रॉस वोटिंग करवाई। कांग्रेस का प्रत्याशी राज्यसभा पहुंचा है, जो गरीब और दलित वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। वहीं भाजपा ने अपने पदाधिकारी को तीसरे उम्मीदवार के तौर पर उतारकर लोकतंत्र की हत्या की है।

किसानों के नाम पर भी हो रहा भ्रष्टाचार

कोरियावास मेडिकल कॉलेज के नामकरण को लेकर प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि राव तुलाराम एक शहीद रहे हैं, वहीं महर्षि च्यवन ऋषि एक महान संत हुए हैं। उन्होंने तो आयुर्वेदिक कॉलेज पटौकरा में यहां के संत रहे बाबा खेतानाथ नाम रखा था, जो अभी तक चल रहा है। आगामी 15 अप्रैल बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर की 135वीं जयंती समारोह आयोजित किया जाएगा, जिसमें हरियाणा नवनिर्वाचित राज्यसभा सांसद कर्मवीर बौद्ध मुख्य रूप से शामिल होंगे। प्रदेश में न केवल अपराध और कानून व्यवस्था अपने चरम पर है, बल्कि भ्रष्टाचार के भी मामले आए दिन सामने आ रहे हैं। हाल ही में 590 करोड़ के बड़े बैंक घोटाले में हरियाणा के कई सरकारी अधिकारी, बैंक कर्मचारी व अन्य लोगों को गिरफ्तार किया गया और जांच में सामने आया कि पैसा फर्जी कंपनियों में ट्रांसफर किया गया। यमुनानगर में 42 करोड़ के धान खरीद घोटाले में हैफेड के अधिकारी की गिरफ्तारी से यह साफ है कि किसानों के नाम पर भी भ्रष्टाचार हो रहा है, जो बेहद शर्मनाक है।

यह रहे मौजूद

इस मौके पर कांग्रेस जिला अध्यक्ष सतवीर झूकिया, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता महेंद्र सिंह राता, दिलीप सिंह चेयरमैन, युवा जिला अध्यक्ष कृष्ण राव, सुमेर बिहाली, कमलेश चेयरमैन, ओपी यादव, प्रोफेसर राजबीर, पूर्व उप जिला प्रमुख सुनीता वर्मा, अजीत यादव सिहमा प्रधान, बलबीर प्रधान, सुमेर सरपंच, बलवंत मोहनपुर व वीरेंद्र प्रधान आदि मौजूद रहे।

वहीं बृजेंद्र सिंह की सद्भाव यात्रा पर राव नरेंद्र ने कहा कि यह कांग्रेस की आधिकारिक यात्रा नहीं है और जो नेता इसमें शामिल होना चाहते हैं, वह हो सकते हैं।

विशेषः विश्व विरासत दिवस 18 अप्रैल

हमारे अतीत की पहचान, मानवीय सभ्यता की निशानियां, ऐतिहासिक धरोहरें हम सभी का गौरव हैं। लेकिन आपदाओं और मानवीय संघर्षों से इनके अस्तित्व पर भी संकट मंडराने लगा है। ऐसे में विश्व विरासत दिवस की इस वर्ष की थीम 'संघर्षों और आपदाओं के संदर्भ में जीवंत विरासत के लिए आपातकालीन प्रतिक्रिया'-अत्यंत सामयिक है। हम सभी को विरासतों के संरक्षण के लिए संकल्पित होना चाहिए।

संघर्षों-आपदाओं के इस दौर में लें विश्व धरोहरों के संरक्षण का संकल्प

कवर स्टोरी
शिखर चंद जैन

बीते कुछ वर्षों से विश्व भर में कई जगहों पर युद्ध और संघर्ष की भयावह स्थिति बनी हुई है। प्राकृतिक और मानवकृत आपदाएं भी अपने चरम पर हैं। आज दुनिया जिस मोड़ पर खड़ी है, वहां केवल मानव जीवन ही नहीं, बल्कि हमारी सदियों पुरानी पहचान, हमारी विरासत भी खतरे में है। इस वर्ष विश्व धरोहर दिवस की थीम हमें याद दिलाती है कि जब जानलेवा और विध्वंसक मिसाइल और बम गिरते हैं या नदियां, सागर उफनते हैं, पहाड़ दरकते हैं, तो केवल इमारतें नहीं ढहतीं, बल्कि एक सभ्यता की आत्मा घायल होती है। ऐसे में हमारी सदियों पुरानी अनमोल धरोहरों का संरक्षण, चिंता का बड़ा विषय बन गया है। ये विरासतें कई प्रकार की हैं, धार्मिक, सांस्कृतिक, प्राकृतिक, ऐतिहासिक और जीवंत। ये हमारी पहचान हैं। ये हमारे पूर्वजों, महापुरुषों और विद्वानों की स्मृति के साथ-साथ आने वाली पीढ़ी के लिए एक दस्तावेज जैसी हैं, जिन्हें सुरक्षित और संरक्षित रखना अत्यंत आवश्यक है।

जीवंत विरासत का अर्थ

'जीवंत विरासत' का मतलब सिर्फ पत्थर की दीवारें नहीं होती हैं। इसमें हमारी लोक कथाएं, पारंपरिक संगीत, हस्तशिल्प और वे त्योहार भी शामिल होते हैं, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलते आ रहे हैं। संघर्ष के समय जब लोग विस्थापित होते हैं, तो ये 'अमूर्त विरासत' ही उन्हें अपनी जड़ों से जोड़े रखती हैं। इन्हें बचाना मानवीय गरिमा को बचाने जैसा है। जाहिर है, यह थीम केवल इमारतों या स्मारकों तक सीमित नहीं है, बल्कि 'लिविंग हेरिटेज' यानी हमारी परंपराओं, लोक कलाओं, भाषाओं और उत्सवों पर जोर देती है, जो मानवीय अस्तित्व का अभिन्न अंग हैं।

हेरिटेज का डिजिटलाइजेशन

आपदाओं में भौतिक नुकसान की भरपाई संभव नहीं होती, इसलिए आधुनिक तकनीक (3डी मैपिंग, क्लाउड स्टोरेज) के जरिए विरासत का डिजिटल रिकॉर्ड रखना अनिवार्य हो गया है ताकि भविष्य में पुनर्निर्माण किया जा सके। भौतिक रूप से नष्ट हुई विरासत को दोबारा जीवित करने का एकमात्र तरीका 'डिजिटल ट्विन' तकनीक है। 3डी लेजर स्कैनिंग और ड्रोन मैपिंग के जरिए हर बारीक नक्काशी का रिकॉर्ड रखना अब जरूरत बन गई है, ताकि भविष्य में पुनर्निर्माण सटीक हो सके।

दोहरे खतरों की पहचान

वर्तमान में दुनिया भर में विरासत दो प्रमुख मोर्चों पर खतरे में हैः पहला, मानव निर्मित सशस्त्र संघर्ष (युद्ध) और दूसरा, प्रकृति जनित जलवायु परिवर्तन व आपदाएं (बाढ़, भूकंप, आग)। बदलते मौसम, अनियंत्रित बाढ़ और भूकंप ने कई प्राचीन शहरों को मलबे में बदल दिया। इसलिए जरूरी है कि आपदा प्रबंधन की योजना में ऐतिहासिक स्मारकों को भी प्राथमिकता दी जाए, ताकि मलबे के साथ इतिहास न दफन हो जाए।

सांस्कृतिक पहचान पर न हो प्रहार

युद्ध और संघर्ष के दौरान अकसर सांस्कृतिक प्रतीकों को जानबूझकर निशाना बनाया जाता है ताकि किसी समुदाय की पहचान और मनोबल को तोड़ा जा सके। जब युद्ध और सशस्त्र संघर्ष का क्रूर प्रहार होता है तो सांस्कृतिक पहचान पर चोट पहुंचती है। रूस-यूक्रेन से लेकर मध्य-पूर्व (फिलिस्तीन-इजरायल और ईरान-अमेरिका) तक के मौजूदा संघर्षों में हमने देखा है कि ऐतिहासिक संग्रहालयों और पुस्तकालयों को निशाना बनाया गया। इस वर्ष की थीम का मुख्य उद्देश्य, युद्ध क्षेत्रों में इन संपत्तियों को (नो-वॉर जोन) के रूप में मान्यता दिलाना और उनके विनाश को 'युद्ध अपराध' के रूप में कड़ाई से लागू करना है। थीम इसके विरुद्ध एक सुरक्षा कवच तैयार करने की वकालत करती है।

त्वरित प्रतिक्रिया की आवश्यकता

विरासत के संरक्षण के लिए त्वरित प्रतिक्रिया तंत्र विकसित करना जरूरी है, जैसे आग लगने पर फायर ब्रिगेड पहुंचती है, वैसे ही विरासत के लिए 'कल्चरल फर्स्ट एड' की जरूरत होती है। इसमें विशेषज्ञों की ऐसी टीमें शामिल होनी चाहिए, जो संकट के पहले 48 घंटों में कीमती पुरावशेषों को सुरक्षित स्थान पर ले जा सकें या उन्हें प्रोटेक्ट कर सकें। आपदा के समय जिस तरह इंसानी जान बचाने के लिए 'फर्स्ट रिस्पॉन्स' टीम होती हैं, उसी तरह विरासत को बचाने के लिए भी एक त्वरित कार्य योजना और प्रशिक्षित विशेषज्ञों की जरूरत होती है।

स्थानीय समुदायों की भूमिका

विरासत का असली संरक्षक वह समुदाय है, जो वहां रहता है। संघर्ष के समय स्थानीय लोगों को 'हेरिटेज वॉरियर्स' के रूप में प्रशिक्षित करना सबसे प्रभावी बचाव साबित होता है।

नीतिगत सुधार की जरूरत

सरकारों को अपनी राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन नीतियों में 'विरासत संरक्षण' को एक अनिवार्य अध्याय के रूप में जोड़ने की आवश्यकता है। अवैध तस्करी पर लगाम लगाने की भी जरूरत है। अकसर देखा गया है कि संघर्ष और अस्थिरता के दौरान प्राचीन मूर्तियों और कलाकृतियों की चोरी और अंतरराष्ट्रीय तस्करी बढ़ जाती है। थीम का एक हिस्सा यह भी है कि आपातकालीन स्थिति में अंतरराष्ट्रीय सीमाओं पर सांस्कृतिक संपदा की निगरानी सख्त की जाए।

भविष्य की तैयारी

इस वर्ष की थीम हमें याद दिलाती है कि विरासत को बचाना केवल अतीत का सम्मान नहीं है, बल्कि अनिश्चित भविष्य के लिए अपनी जड़ों को सुरक्षित रखना है। संकट के समय विरासत बचाने के लिए भारी धन की आवश्यकता होती है। यूनेस्को और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं को एक 'इमरजेंसी हेरिटेज फंड' को और मजबूत करना होगा, ताकि गरीब और विकासशील देशों की विरासत को संसाधनों के अभाव में नष्ट होने से बचाया जा सके।

नागरिक भी बनें जागरूक

विरासत की रक्षा एक सरकारी जिम्मेदारी से बढ़कर एक नागरिक कर्तव्य भी है। शिक्षा और मीडिया के माध्यम से युवाओं को यह समझाना होगा कि अगर हमारी विरासत मिट गई, तो हमारे पास आने वाली पीढ़ियों को सुनाने के लिए कोई कहानी नहीं बचेगी। लोगों को बताना होगा कि विरासत की रक्षा कोई 'सॉफ्ट टारगेट' नहीं बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और वैश्विक शांति का हिस्सा है। संघर्ष थमेंगे और आपदाएं बीत जाएंगी, लेकिन जो विरासत हम खो देंगे, वह कभी वापस नहीं आएगी। समय आ गया है कि हम अपनी पहचान को बचाने के लिए 'रिएक्टिव' होने के बजाय 'प्रोएक्टिव' बनें। *

अंतरराष्ट्रीय सहयोग

युद्ध क्षेत्रों में सांस्कृतिक संपत्ति की सुरक्षा के लिए 'हेग कन्वेंशन' और 'ब्लू शील्ड' जैसे अंतरराष्ट्रीय मानकों का सख्ती से पालन करना समय की मांग है। जब कोई समुदाय युद्ध या आपदा से उबरता है, तो अपनी परंपराओं (जैसे सामूहिक नृत्य या उत्सव) को फिर से शुरू करना उनके मानसिक स्वास्थ्य के लिए मरहम का काम करता है। विरासत केवल बीता हुआ कल नहीं, बल्कि भविष्य की आशा है। आपदा या युद्ध के बाद जब लोग अपनी परंपराओं और उत्सवों (लिविंग हेरिटेज) की ओर लौटते हैं, तो यह सामाजिक एकजुटता को वापस लाने में मदद करता है।

नवगीत
माणिक विश्वकर्मा 'नवरंग'

प्रथम गीत लिखने वाले ने

प्रथम गीत लिखने वाले ने,
कितना दर्द सहा होगा।
आंखों से उसका हर सपना,
अनगिन बार बहा होगा।
अपने आतुर अरमानों को
ढांढ़स देकर फुसलाकर
रेतीले महलों के जैसे
सागर तट तक ले जाकर
जितनी बार बनाया होगा,
उतनी बार ढहा होगा।
राग से विमुखता होने पर,
मन होता है वैरागी
सिंचित हुए बिना मधुरस के
कौन हुआ है अनुरागी
कानों में चुपके से कोई
कुछ न कुछ तो कहा होगा।
जब विश्वास टूटता है तो
दिल से आह निकलती है
बागी होकर स्वयं लेखनी
अपनी राह बदलती है
दुख देने वाला मानस में,
कोई नाम रहा होगा।

व्यंग्य / भूपेंद्र भारतीय

विचारक बनने की हवा

भिया का मन मंच की ओर जाने के लिए तड़फड़ाने लगा। शब्द विचार बनने को बेताब होने लगे, भिया का विचारक व्यक्तित्व अवतरण लेने लगा। दुनिया को एक और विचारक मिलने वाला है।

भिया इन दिनों विचारक बनने की यात्रा में हैं। चुनाव दूर है तो यही कर लिया जाए। ऐसा भिया के मन में विचार उमड़ा। विचार क्या, यह भिया के लिए क्रांतिकारी कदम जैसा है। अब तक माला, माइक, मंच व फोटो की ही हवा चल रही थी, लेकिन विचारों की हवा का अभाव था! भिया को फिर विचार आया कि इन सभी के साथ मुझे एक बड़ा विचारक भी होना चाहिए। जनता बात-बात में माइक पकड़ा देती है। ऐसे में बिना विचार के विचारक कैसे बन सकते हैं? मंच का संचालन करने वाला तो दो शब्द कहने को ही कहता है लेकिन वे दो शब्द मंच से जनता तक पहुंचाने में बड़ी मशक्कत करनी होती है। कभी-कभी तो विचारों के आभाव में एक शब्द भी नहीं निकलता। सिर्फ हवा ही माइक से निकलती है। इन सभी बातों को ध्यान में रखकर भिया आजकल विचारक बनने के लिए लंबी-लंबी चिंतन बैठकें कर रहे हैं। कई-कई कप चाय सुड़कते हुए, सिगरेट का धुआं उड़ाते हुए कागज-कलम के साथ विचारक बनने की प्रैक्टिस करने लगे हैं।

मगर विचारक बनने की इस बेचैनी में एक तरफ विचार है कि आ नहीं रहे हैं और कार्यकर्ता भिया के लिए नए-नए मंच तैयार कर रहे हैं। भिया के विचारक बनने की हवा चलाने के लिए क्षेत्र में पहले से धंसी पड़ी कुछ संस्थाओं को पुनर्जीवित किया गया और कुछ नई संस्थाओं का निर्माण किया गया। कार्यकर्ता जी-जान से भिया के विचारक बनने की हवा बनाने लगे और इधर अभी भिया पक्के विचारक बने ही नहीं और कार्यकर्ताओं ने 'भ्रष्टाचार हटाओ अभियान' कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में भिया का नाम लिखा दिया। भिया चिंतित हैं कि अब इस विषय पर मैं क्या बोलूं? यह विषय तो मेरी विपरीत धारा का है। अब तक तो भ्रष्टाचार के मामलों में हम घिरते ही आए हैं और अब इस पर विचार कैसे रखूं? इस विचित्र मामले में कैसे हवा बनाऊं? यह कैसे संभव होगा। बस, फिर क्या था! भिया को भी विपरीत परिस्थिति ने ही मार्ग दिखाया। जैसे बड़े नेता विपरीत परिस्थितियों में ही अपनी छवि को और अच्छे से चमका लेते हैं। भिया ने भी झट से अवसर को लपक लिया।

ऐसी विपरीत परिस्थिति में नए-नए विचार आने लगे, उन्हें लगने लगा। विचारक बनने की हवा शुरू हो गई है। भिया अपने विषय की भूमिका बनाने लगे। भ्रष्टाचार हटाओ अभियान सिर्फ नारा नहीं, हमारे क्षेत्र व जनता के लिए एक क्रांति लाने वाला है। ऐसे अजीबो-गरीब विचार भिया के मन में गुड़गुड़ाने लगे। भिया का मन मंच की ओर जाने के लिए तड़फड़ाने लगा। शब्द विचार बनने को बेताब होने लगे, भिया का विचारक व्यक्तित्व अवतरण लेने लगा। दुनिया को एक और विचारक मिलने वाला है। यह विचारों की क्रांति है। इससे पहले भिया चुनावों में बड़ी-बड़ी हवा बना चुके थे। विकास की हवा चलाने में भिया से बड़ा नेता आज तक उनके क्षेत्र में कोई दूसरा आया ही नहीं। शिक्षा विभाग से लेकर राजस्व विभाग तक ऐसा कोई मलाईदार विभाग भिया की टीम से छूटा नहीं, जिसमें भिया ने चुनाव जीतने के छः माह बाद ही अपनी हवा नहीं चलाई हो। लिफाफे की हवा, फिक्स रेट की हवा, ट्रांसफर की हवा, खदान लेने की हवा, ठेका देने की हवा, सरकारी नौकरी देने की हवा जैसी सैकड़ों हवाएं हैं, जो क्षेत्र में निरंतर पांच साल चलती रहीं। भिया की जीत से छः माह के बाद ही अधिकांश विभाग उनकी हवा से महकने लगे।

ऐसे ही विचार भिया के मन में क्रांति की हवा बनाने लगे। भिया को विचारक बनने की हवा धीरे-धीरे आने लगी। इस हवा को और बड़ा करने में कार्यकर्ता सोशल मीडिया का सहारा लेने लगे। जेन-जी को इस हवा से जोड़ने की कोशिश की जाने लगी।

धीरे-धीरे विचारक बनने की हवा सभी ओर फैलने लगी। सुबह जैसे ही भिया घर से क्षेत्र के लिए निकलते उनकी लग्जरी कार में लगे हूटर से उनके विचारक होने की हवा चलने लगती। फेसबुक पर जनता के नाम संदेश देने में बड़े विचारक होने की हवा का हल्ला रहता।

इधर धीरे-धीरे ऑनलाइन मीटिंग में भी भिया विचारक सिद्ध होने लगे। अपने दल में उनकी हवा बढ़ने लगी। वे एक बुद्धिजीवी की श्रेणी में आ गए। विचारक बनने की हवा ने बड़ा काम कर दिया। भिया विचारक की हवा से राजनीति में लंबा उड़ने की सोचने लगे। अपने दल की ओर से प्रवक्ता बनकर राष्ट्रीय मीडिया में बैठकर राष्ट्रीय स्तर पर हवा चलने के सपने आने लगे। भिया के चेले-चपाटे उनके लिए नए-नए मंचों का निर्माण करने लगे। विचारक बनने की हवा क्षेत्र में तीव्र गति से चलने लगी। पुराने विचारक और बुद्धिजीवी चिंतित होने लगे। भिया की विचारक बनने वाली हवा में पूरा क्षेत्र विकास की ओर अग्रसर होने लगा। *

लघुकथा / सुनील कुमार महला

कर्तव्यबोध

विशाखा एक शहर में हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी में रहती थी। कॉलोनी के बीचों-बीच एक सुंदर सार्वजनिक पार्क था। चारों ओर हरे-भरे पेड़-पौधे, रंग-बिरंगे फूल, बच्चों के झूले और फिसलन-पट्टी उसे जीवंत बनाते थे। सुबह-शाम कॉलोनी के बच्चे, बुजुर्ग और परिवार के लोग वहां टहलने, बैठकर बातें करने और समय बिताने आया करते थे। गर्मियों के दिन शुरू हुए तो किसी संवेदनशील व्यक्ति ने पक्षियों के लिए पेड़ों पर सात-आठ परिंडे (मिट्टी के बर्तन) टांग दिए। पार्क के एक कोने में दाना चुगने का स्थान भी बना था, जहां तोते, कबूतर, कौवे, गौरैया और मैना आदि पक्षी आकर दाना चुगते थे। जब भीषण गर्मी पड़ने लगी तो कुछ ही दिनों में उन परिंडों का पानी सूख गया। लोग रोज पार्क में आते, घूमते, बातें करते, बच्चे खेलते, लेकिन किसी की नजर उन सूखे परिंडों पर नहीं ठहरती। विशाखा की नजर भी कई बार उन पर पड़ती, लेकिन फिर भी उसने इस ओर ध्यान देने की जरूरत नहीं समझी। मन में बस यही विचार आता-यह काम मेरा अकेले का नहीं है, कॉलोनी में और भी तो लोग हैं। एक दिन उसका बेटा अमन पार्क में खेलते-खेलते उन परिंडों के पास पहुंच गया। उसने देखा कि वे पूरी तरह सूखे पड़े हैं। घर आकर उसने अपनी मां से कहा, 'मम्मा, पार्क में पक्षियों के परिंडों में कई दिनों से पानी नहीं है।' विशाखा ने सहज भाव से उत्तर दिया, 'कॉलोनी में इतने लोग हैं, क्या सिर्फ हमारी ही जिम्मेदारी है इन्हें भरने की?' अमन ने शांत स्वर में कहा, 'मम्मा, जिम्मेदारी सबकी होती है, लेकिन सब कुछ जानते हुए भी उसे निभाने से बचना सबसे बड़ी गलती है।' बेटे की बात सुनकर विशाखा कुछ पल के लिए मौन रह गई। उसे आभास हुआ, कभी-कभी छोटे बच्चे भी हमें बड़ा सच सिखा देते हैं। विशाखा को अपने कर्तव्यबोध का अहसास हो चुका था। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

जब आदिवासी गाता है

पुस्तकः जब आदिवासी गाता है (कविता संग्रह), **रचनाकारः** जमुना बीनी, **मूल्यः** 250 रुपए, **प्रकाशकः** राधाकृष्ण पेपरबैक्स, दिल्ली

भारत के पूर्वोत्तर राज्य अरुणाचल प्रदेश से आने वालीं लेखिका जमुना बीनी का कविता संग्रह 'जब आदिवासी गाता है' कुछ समय पूर्व छपकर आया है। यहां, कहीं आदिवासी जीवन की त्रासदी का स्वर सुनाई पड़ता है, *'जिनको उखड़ना/ पड़ता है/ बार-बार/ अपनी जड़ों से/ उनके लिए/ वाकई/ भविष्य शब्द के/ क्या मायने हैं?'* (भविष्य)। तो कहीं प्रकृति से दूर किए जाने का दर्द भी छलकता है, *'पहाड़-पृथ्वी के प्राचीन वासी/ हमारे पुरातन संगी/ अलग नहीं कर सकते हम/ उनसे खुद को।'*(पहाड़ और आदिम निवासी)। कुछ कविताओं में आधुनिक जीवन में डिजिटल संक्रमण से पसरती संवेदनशून्यता को भी कवयित्री ने कटघरे में खड़ा किया है। इसकी बानगी इन पंक्तियों में देखी जा सकती है। *'निश्चय ही/ हमारी संवेदनाएं/ जंग खाती जा रही हैं/ वीभत्स में/ लोग अब/ लेने लगते हैं स्वाद'*(डर)। और *'जितना ज्यादा चॉइस/ उतनी अधिक कशमकश/ चॉइस की भरमार/ इनसान को/ उलझाते/ और/ भरमाते ज्यादा/ सुलझाते कम।'* (टेलिविजन चैनल)। *

{ पर्यटन स्थल / समीर चौधरी }

वैसे तो समुद्र तट का नैसर्गिक नजारा हर नेचर लवर को आकर्षक लगता ही है। लेकिन दुनिया के कुछ समुद्र तट इतने विशाल-लाजवाब हैं कि दूर-दूर से पर्यटक इन्हें निहारने आते हैं। शांत, खुले तट से लेकर स्थानीय जीवन से भरे हुए ये समुद्र तटीय क्षेत्र प्रकृति को अपने सबसे प्रभावी रूप में पेश करते हैं। ऐसे ही कुछ खूबसूरत और विशाल सी बीचेज के बारे में आप भी जानिए।

लाजवाब-खूबसूरत नजारा पेश करते
दुनिया के ये समुद्र तट

नाइंटी माइल बीच ऑस्ट्रेलिया

नाइंटी माइल बीच ऑस्ट्रेलिया के विक्टोरिया में स्थित है, जो 151 किमी. में फैला हुआ है और व्यस्त शहरी जीवन के विपरीत सुकून और शांति भरे लम्हों का यादगार अनुभव प्रदान करता है। इसका तट ऐसा प्रतीत होता है, जैसे कभी खत्म ही न होगा। तट के बीच-बीच में रेत के टीले, छोटी झीलें और संरक्षित वाटर रिजर्व आपको देखने को मिल जाएंगे। तट का पानी एकदम स्वच्छ है, जिससे तैराकों और मछुआरों के लिए यह पसंदीदा स्थल बन जाता है। हालांकि इसका नाम नाइंटी माइल है लेकिन इसके विपरीत यह 90 मील से अधिक लंबा है। इसके शांतिपूर्ण एकांत में गजब का आकर्षण है। *

प्राया डो कैस्सिनो ब्राजील

दक्षिण अमेरिकी देश ब्राजील के दक्षिणी तट पर प्राया डो कैस्सिनो, दुनिया का सबसे लंबा समुद्र तट है, जो लगभग 254 किमी. तक फैला हुआ है। इसकी प्रभावी लंबाई रिओ ग्रांडे बंदरगाह से शुरू होकर उरुग्वे की सीमा तक जाती है। यह क्षेत्र अपने दूर तक फैले रेत, समुद्र के किनारे जीवंत शहरों और अकसर समुद्र के किनारे धूप सेंकते सी लायंस की मौजूदगी के लिए विख्यात है। यह सी बीच, स्थानीय लोगों की पसंदीदा जगह है, जहां लोग लांग ड्राइव, तटीय फिशिंग और ठंडी हवा में वॉक करना खूब पसंद करते हैं। *

पद्रे सी आईलैंड बीच अमेरिका

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में टेक्सास के तट पर पद्रे द्वीप है, जोकि संसार का सबसे लंबा बैरियर द्वीप है। यह वन्यजीवों का अभयारण्य है, जिसमें दुर्लभ सी टर्टल और समुद्री पक्षियों की सैकड़ों प्रजातियां पाई जाती हैं। पद्रे आइलैंड नेशनल सी-शोर लगभग 112 किमी. लंबा है। इस बीच को नम हवा भरे वातावरण और वन्यजीवों के कारण विशेष रूप से पसंद किया जाता है। पर्यटक अकसर यहां कैंपिंग करने, पक्षियों को देखने और खाड़ी के किनारे वाक के लिए आते हैं। *

कॉक्स बाजार सी बीच बांग्लादेश

बांग्लादेश में स्थित कॉक्स बाजार बीच पर अकसर इस बात का जश्न मनाया जाता है कि यह संसार के सबसे लंबे प्राकृतिक समुद्र तटों में से एक है। बंगाल की खाड़ी में इस तट की लंबाई 120 किमी. है। इसके तट पर अनोखी चट्टानें, मुलायम रेत और जीवंत स्थानीय संस्कृति के दर्शन होते हैं, जो फिशिंग और पर्यटन के लिए फेमस हैं। जब दूर इसके क्षितिज में सूरज पानी में डूबता दिखता है, तो पूरा बीच दिल को अनोखा सुकून देने वाले रंगों से चमक उठता है। *

नाइंटी माइल बीच न्यूजीलैंड

ऑस्ट्रेलिया की तरह न्यूजीलैंड के एक समुद्र तट का नाम भी नाइंटी माइल बीच है, लेकिन इसकी लंबाई 88 किमी. है, जो इसके नाम से दो किलोमीटर कम है। अपनी अनोखी सुंदरता से यह पर्यटकों को खूब आकर्षित करता है। ऐसे प्रमाण मिलते हैं कि अतीत में इसे हॉर्स राइडिंग के लिए इस्तेमाल किया जाता था। अब इसे एडवेंचर एक्टिविटीज के लिए यूज किया जाता है। यहां मौजूद सरफिंग स्पेस और रेत के ऊंचे-ऊंचे टीले इसे बहुत आकर्षक बना देते हैं। *

बैंकूवर द्वीप लांग बीच कनाडा

कनाडा के बैंकूवर द्वीप के पश्चिमी तट पर लांग बीच स्थित है। यह सिर्फ 16 किमी. लंबा है, जिससे यह काफी छोटा सी बीच माना जाता है, लेकिन इसके बावजूद यह उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के सबसे सुंदर सी बीच में शामिल है। इसके दूर तक फैले समतल रेतीले समुद्र तट सभी को आकर्षित करते हैं। यह बीच कनाडा के संरक्षित राष्ट्रीय पार्क का हिस्सा है। यह बीच कोहरे भरी सागर तटीय सुबह और सरफिंग के लिए विख्यात है। *

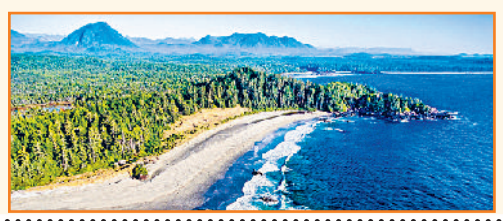

अपनाएं ये गोल्डेन रूल्स संवारें अपना सुनहरा भविष्य

सुनहरे भविष्य के लिए उचित दिशा में सही सही रणनीति के साथ मेहनत करना तो जरूरी है ही। साथ ही अगर कुछ गोल्डेन रूल्स को फॉलो किया जाए तो सफलता पाने की राह आसान हो जाएगी। ऐसी ही कुछ छोटी बातें आप भी अपने जीवन में अपना सकते हैं।

{ सेल्फ इंप्रूवमेंट / अंजू जैन }

कई बार कड़ी मेहनत के बावजूद हमें वे परिणाम नहीं मिल पाते, जो हम चाहते हैं। विश्व प्रसिद्ध विचारकों के अनुभव बताते हैं कि सफलता का असली राज हमारी सोच, कर्मठता और भावनाओं में छिपा होता है। हम अपने भाग्य के स्वयं विधाता हैं। यदि हम अपनी आंतरिक भावनाओं को सुधार लें, तो बाहरी परिस्थितियां अपने आप बदलने लगती हैं।

पहचानें अपनी भावनाएं: हमारी भावनाएं और वाइब्रेशंस हमारे जीवन के अनुभवों को निर्धारित करती हैं। हम जो महसूस करते हैं, वही हम अपनी ओर आकर्षित करते हैं। अगर हम सकारात्मक भावनाओं (जैसे खुशी, प्रेम, उत्साह) पर ध्यान केंद्रित करें, तो हम अपने जीवन में सकारात्मक परिणाम ला सकते हैं। इसके विपरीत, नकारात्मक भावनाएं (जैसे डर, गुस्सा, निराशा) नकारात्मक अनुभवों को आकर्षित करती हैं।

जब तक हम अपने लक्ष्य के प्रति उत्साहित महसूस नहीं करेंगे, तब तक वह हकीकत नहीं बनेगा। बेस्ट सेलर पुस्तक 'एक्सक्यूज मी, योर लाइफ इज वेटिंग' की लेखिका लिन ग्रैबहॉर्न कहती हैं, 'ब्रह्मांड में हर चीज एक ऊर्जा या फ्रीक्वेंसी पर काम करती है। यदि आप लगातार डर, चिंता या कमी के बारे में महसूस करते हैं, तो आप अनजाने में वैसी ही स्थितियों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे होते हैं। अपनी फ्रीक्वेंसी बदलने का मतलब है, अपनी आंतरिक स्थिति को बदलना।'

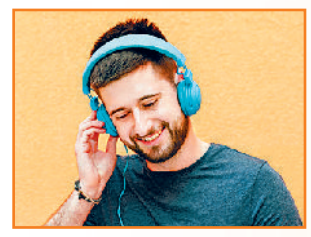

कमी के बजाय संभावनाओं पर ध्यान दें: ज्यादातर लोग इस बात पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि उनके पास क्या 'नहीं' है। अनुभवी और सफल लोगों का कहना है कि आप जिस चीज पर अपना ध्यान केंद्रित करेंगे, वह बढ़ती जाएगी। यदि आप अपनी समस्याओं के बजाय समाधान और संभावनाओं पर ध्यान देंगे, तो आपके जीवन में खुशहाली के द्वार खुलेंगे। इसलिए सकारात्मक भावनाओं को महसूस करें। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की भावना को अभी से महसूस करें। उदाहरण के लिए, अगर आप धन चाहते हैं, तो धनी होने की खुशी और आत्मविश्वास को महसूस करें। विश्वास रखें कि ब्रह्मांड आपके इरादों को साकार करने में मदद करेगा।

दबाव में न आएं: जब हम किसी चीज के लिए बहुत ज्यादा कोशिश करते हैं, तो हम अकसर दबाव महसूस करते हैं। यह दबाव नकारात्मक ऊर्जा पैदा करता है। इसके बजाय, ऐसा महसूस करें जैसे वह लक्ष्य पूरा होने ही वाला है बस, जरा-सी कोशिश और करनी है। यह सहजता ही आपकी सफलता का मार्ग प्रशस्त करती है। नेपोलियन हिल कहते हैं, 'इंसान का दिमाग जो सोच सकता है और जिसमें विश्वास कर सकता है, उसे वह हासिल भी कर सकता है।'

आभार का जादू इस्तेमाल करें: आभार का जादू केवल एक भावना नहीं, बल्कि एक शक्तिशाली 'कॉस्मिक टूल' है। जो आपके पास है, उसके लिए आभारी होना आपकी वाइब्रेशन को तुरंत 'उच्च स्तर' पर ले जाता है। प्रसिद्ध दार्शनिक और लेखक मैस्टर एकहार्ट के अनुसार, 'यदि आप अपने पूरे जीवन में केवल एक ही प्रार्थना करते हैं, 'धन्यवाद' तो यही काफी है।' यह साधारण सा शब्द आपके जीवन में अधिक आशाओं और अच्छी चीजों को आमंत्रित करता है।

'एक्सक्यूज मी' कहना सीखें: अकसर हम दूसरों को खुश करने के चक्कर में अपनी मानसिक शांति दांव पर लगा देते हैं। लेकिन उन चीजों या लोगों को 'एक्सक्यूज मी' कह कर आगे बढ़ जाना जरूरी है, जो आपकी ऊर्जा को सोख लेते हैं। ऐसे लोगों को ज्यादा तवज्जो न दें। स्वयं को प्राथमिकता देना स्वार्थ नहीं, बल्कि आपकी वेल बीइंग के लिए जरूरी है।

पहचानें आप क्या चाहते हैं: अपने जीवन में उन चीजों को पहचानें जो आपको पसंद नहीं हैं या जो आपको परेशान करती हैं। इससे आपको स्पष्टता मिलती है कि आप वास्तव में क्या चाहते हैं। साथ ही यह भी तय करें कि आप क्या नहीं चाहते हैं। स्पष्ट रूप से यह निर्धारित करें कि आप अपने जीवन में क्या हासिल करना चाहते हैं, जैसे खुशी, सफलताएं या बेहतर रिश्ते। जिन चीजों से परेशानी होती है और ऊर्जा नष्ट होती है, उनसे दूर रहना सीख लीजिए।

छोटी-छोटी खुशियों का महत्व समझें: बड़ा बदलाव लाने के लिए हमेशा बड़े कदम उठाना जरूरी नहीं है। कभी-कभी एक अच्छा संगीत सुनना, प्रकृति में टहलना या किसी पुराने मित्र से बात करना भी आपकी मानसिक ऊर्जा को बदल सकता है। यही छोटे चुनाव बड़े परिणामों की आधारशिला रखते हैं। हर छोटी से छोटी उपलब्धि को सेलिब्रेट करें, उत्साहित हों। *

{ नदीगाथा / वीना गौतम }

थार मरुस्थल की जीवनरेखा लूनी नदी

अरावली पर्वतमाला में अजमेर के पास स्थित नाग पर्वत से निकलने वाली लूनी नदी, एकमात्र ऐसी नदी है, जो थार के मरुस्थल से होकर बहती है। यह भारत की सबसे बड़ी और अकेली अंतःस्थलीय (इनलैंड) नदी है यानी यह नदी समुद्र तक नहीं पहुंचती बल्कि कच्छ के रण में ही विलीन हो जाती है। इसे थार के मरुस्थल की जीवनरेखा कहते हैं, जो भले सीमित जल संसाधन की मालिक हो, लेकिन इसी की बदौलत थार मरुस्थल में जैव विविधता मौजूद है यानी लूनी नदी रेगिस्तान में बहने वाली ऐसी नदी है, जिसके आस-पास का पारिस्थितिकी तंत्र बेहद संवेदनशील और अनूठा है।

नदी की विशिष्टताएं: लूनी इस नदी की लंबाई कुल 495 किलोमीटर है और अपनी प्रकृति के हिसाब से ये मौसमी नदी है, जो अरावली पर्वतमाला से निकलकर गुजरात में कच्छ के रण में विलीन हो जाती है। लूनी नदी की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इस नदी का शुरुआती सिरा मीठे पानी का और अंतिम सिरा खारे पानी का है। इस मामले में शायद यह दुनिया की ऐसी खास नदी है, जो एक साथ मीठी और खारी दोनों है। अंतःस्थलीय लूनी नदी को अजमेर के पास सागरमती कहा जाता है। करीब 150 किलोमीटर बहने के बाद इसे लवणी या लूणी कहा जाने लगता है। यह पूरी तरह से वर्षा आधारित यानी (रेन फेड) नदी है। इसके बहाव का मुख्य भाग राजस्थान में है और अंतिम भाग गुजरात में है।

मानसून आधारित नदी: मौसमी नदी लूनी, दक्षिण-पश्चिम मानसून पर आधारित है। इसका प्रवाह जुलाई से सितंबर के बीच रहता है, जिसमें शुरू में तेज बहाव होता है, यहां तक कि कई जगहों में यह बाढ़ का कारण भी बनती है। लूनी नदी की खासियतों में एक यह भी है कि यह नदी पूरी तरह से वर्षा से प्रभावित नदी है। अगर जरा भी बारिश अनियमित होती है, तो यह भी अनियमित हो जाती है।

कुछ हिस्सा है खारा: निचले छोर यानी जालोर से कच्छ के बीच इस नदी का पानी खारा हो जाता है। क्योंकि यहां यह रेतीले मैदानों और दलदली क्षेत्र में होकर गुजरती है। भले यह गंगा और यमुना जैसी सांस्कृतिक और सभ्यतामूलक नदी धारा के रूप में न पहचानी जाती हो, लेकिन इसके किनारे भी सभ्यता के कुछ विशेष रूप जन्मे हैं और कुछ राजस्थानी शहर भी इसके किनारे स्थित हैं- जैसे अजमेर, पाली, जोधपुर। *

{ बड़ा पर्दा / मनोज प्रकाश }

बॉलीवुड फिल्मों में नेगेटिव रोल निभाने वाले एक्टर्स यानी खलनायकों को भले ही हीरो जैसा स्टारडम नहीं मिलता लेकिन उनकी पॉपुलैरिटी किसी भी मायने में नायकों से कम नहीं होती है। कुछ एक्टर्स तो आज भी याद किए जाते हैं। ऐसे ही कुछ बेहतरीन खलनायकों पर एक नजर।

नायकों से कम पॉपुलर नहीं बॉलीवुड के ये खलनायक

प्राण | अमरीश पुरी | अमजद खान | प्रेम चोपड़ा

अपने शुरुआती दौर से ही बॉलीवुड फिल्मों में कई ऐसे खलनायक यानी विलेन हुए हैं, जिन्होंने बड़े पर्दे पर अपनी प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज कराई। दर्शकों को सांस रोककर 'अगले पल क्या होगा?' सोचने को मजबूर कर दिया, इन्हें खौफ का पर्याय माना जाने लगा। 'प्रेम नाम है मेरा-प्रेम चोपड़ा।', 'अरे ओ सांभा, कितने आदमी थे?', 'सारा शहर मुझे लॉयन के नाम से जानता है।', 'मोगैंबो खुश हुआ!' हिंदी फिल्मों के खलनायकों द्वारा बोले गए ऐसे कई संवाद आज भी जीवंत बने हुए हैं।

ये एक्टर हुए सर्वाधिक चर्चित: बात जब हिंदी फिल्मों के खलनायकों की होती है तो सबसे पहले जो नाम जेहन में उभरते हैं, उनमें शामिल हैं-के.एन. सिंह, कन्हैया लाल, प्राण, अजीत, प्रेमनाथ, मदन पुरी, अमजद खान, जीवन, डैनी डेंजोंगपा, कुलभूषण खरबंदा, अमरीश पुरी, मुकेश तिवारी, कृष्ण धवन, प्रेम चोपड़ा, गुलशन ग्रोवर, रंजीत, शक्ति कपूर, कादर खान, रजा मुराद, परेश रावल, सदाशिव अमरापुरकर, किरण कुमार। एक बात यह भी है कि संजीव कुमार से लेकर कबीर बेदी तक और शाहरुख खान, ओम पुरी, मोहनीश बहल, अक्षय कुमार, आमिर खान, सैफ अली खान, संजय दत्त, विवेक ओबेरॉय, रितेश देशमुख, रणवीर सिंह, अनुपम खेर जैसे अभिनेताओं ने भी कम लेकिन विलेन के शानदार रोल निभाए हैं।

यादगार खलनायकों में शामिल गब्बर सिंह: बॉलीवुड में अब तक निभाए गए खलनायक के सबसे प्रभावशाली और यादगार किरदारों में 1975 में आई फिल्म 'शोले' का गब्बर सिंह शामिल है। जिसे पर्दे पर जीवंत किया था अभिनेता अमजद खान ने। पूरे फिल्म सिनेरियो पर नजर दौड़ाएं तो अमजद खान, सिर्फ गब्बर के रोल के कारण अपने पूर्व, समकालीन और बाद के फिल्मी खलनायकों से काफी ऊपर हैं। 'जो डर गया समझो मर गया', 'कितने आदमी थे', 'ये हाथ हमको दे दे ठाकुर', 'तेरा क्या होगा कालिया', फिल्म 'शोले' में गब्बर सिंह का एक-एक संवाद खूब पॉपुलर हुआ और आज भी लोगों की जुबान पर है।

अनुपम खेर

कुलभूषण खरबंदा

'शान' का क्रूर विलेन शाकाल: 'शोले' के बाद की कई फिल्मों में गब्बर सिंह की तरह ही फिल्म के विलेन को खतरनाक और प्रभावशाली ढंग से दिखाने का प्रयास किया गया। 1980 में आई 'शान' में शाकाल का रोल प्ले किया था कुलभूषण खरबंदा ने। 'शाकाल के हाथ में जितने पत्ते होते हैं, उतने ही पत्ते उसकी आस्तीन में होते हैं', 'आदमी दुनिया में हर काम कभी न कभी पहली बार करता ही है', जैसे डायलॉग्स उन दिनों खूब लोकप्रिय हुए थे।

प्रेम चोपड़ा का अलग अंदाज: 'मैं वो बला हूं जो शीशे से पत्थर तोड़ता हूं।' प्रेम चोपड़ा का वह संवाद, जिसे उन्होंने 1983 में 'सौतन' फिल्म में बोला था, उनकी पहचान बन गया। प्रेम चोपड़ा तो अपने रियल नाम से भी फिल्मों में फेमस हुए। 1973 की 'बॉबी' में जब वह कहते हैं, 'प्रेम नाम है मेरा', तो सिनेमा हाल में बैठे हुए दर्शक समझ जाते कि अब नायक-नायिका के साथ कुछ गड़बड़ होने वाली है।

'कर्मा' का इंटेंस विलेन डॉक्टर डैंग: 1986 की फिल्म 'कर्मा' में अनुपम खेर ने डॉक्टर डैंग की यादगार नकारात्मक भूमिका निभाई थी। फिल्म के एक दृश्य में दिलीप कुमार से थप्पड़ खाने के बाद डॉक्टर डैंग का यह डायलॉग, 'इस थप्पड़ की गूंज तुम्हें मरते दम तक सुनाई देगी जेलर।' आज भी दर्शक नहीं भूले हैं। इसके बाद उन्होंने जिस तरह से प्रतिक्रिया व्यक्त की वह डॉक्टर डैंग को दर्शकों के बीच चर्चित कर गया। फिल्म में अनुपम खेर के किरदार और उनके अभिनय को खूब पसंद किया गया।

शक्ति कपूर

रंजीत

कोई नहीं अमरीश पुरी जैसा: हिंदी फिल्मों में कई खलनायक ऐसे हुए हैं, जो पर्दे पर जब तेवर दिखाते हैं तो सामने वाले हीरो पर पूरी तरह हावी हो जाते हैं। ऐसे ही विलेन में अमरीश पुरी भी शामिल हैं। अमरीश पुरी ने 'मिस्टर इंडिया' और 'लोहा' में ऐसे अपना रोल निभाया कि पर्दे पर उनके आते ही दर्शक सीट से उठते ही नहीं थे। दोनों फिल्मों में एक दशक का अंतर था। गब्बर के बाद अमरीश पुरी ही ऐसे खलनायक रहे हैं, जिनके संवाद बच्चों को भी याद हैं। 'मिस्टर इंडिया' में उनके बोले संवाद 'मोगैंबो खुश हुआ' को आज भी बच्चे बोलते रहते हैं।

इनकी खलनायकी ने कायम की मिसाल: प्राण ने भी अपनी खलनायिकी के अंदाज से बड़े-बड़े नायकों को पर्दे पर टक्कर दी। उनकी बेहतरीन खलनायिकी को सामने लाने वाली फिल्मों की फेहरिस्त बहुत लंबी है। प्राण की तरह ही मदनपुरी और प्रेमनाथ भी खलनायिकी करने में उस्ताद थे। प्रेमनाथ का 'पराया धन' तथा 'जॉनी मेरा नाम' में विलेन का रंग बहुत चमकदार रहा। इनके अलावा शक्ति कपूर, किरण कुमार, कादर खान, गुलशन ग्रोवर, रंजीत, परेश रावल और भी कई ऐसे फिल्मी विलेन हुए हैं, जिन्हें नायकों की तरह ही पहचाना जाता है। 'चाइना गेट' में डाकू जगीरा का रोल करने वाले मुकेश तिवारी और 'राम तेरी गंगा मैली' के माणिक लाल उर्फ कृष्ण धवन को भी दर्शक याद करते हैं। *

आज युवाओं के लिए सनग्लासेज एक ऐसी एक्सेसरीज है, जो उन्हें धूप से बचाने के साथ ही उनकी पर्सनालिटी को अपग्रेड भी करती है। यह डिजिटल-रियल दोनों दुनिया में यंगस्टर्स की पर्सनालिटी को समर स्वैग देती है।

अट्रैक्टिव सनग्लासेज बढ़ा दे यंगस्टर्स का समर स्वैग

{ सीजनल फैशन / प्रतिमा अरोड़ा }

गर्मी शुरू होते ही सिर्फ तापमान नहीं बढ़ता बल्कि युवाओं का फैशन मीटर भी हाई हो जाता है। कॉलेज कैंपस, कैफे, मॉल, ट्रैवल स्पॉट, हर जगह एक खास तरह की स्टाइल एनर्जी देखने को मिलती है। उनके इस समूचे 'समर स्वैग' को किसी एक एक्सेसरीज के जरिए व्यक्त करना हो, तो वो है-सनग्लासेज।

सनग्लासेज या धूप का चश्मा सिर्फ चिलचिलाती गर्मी से बचने भर का जरिया नहीं रह गया है बल्कि अब यह एक ऐसी पहचान बन चुका है, जो यंगस्टर्स की पर्सनालिटी को गर्मियों का खास लुक देता है।

एटीट्यूड का हिस्सा: एक समय तक सनग्लासेज को गर्मी के मौसम की एक जरूरत माना जाता था, आंखों को धूप से बचाने के लिए लेकिन अब यह एक एटीट्यूड एक्सेसरीज बन चुका है। जैसे ही कोई सनग्लास पहनता है, उसकी बॉडी लैंग्वेज बदल जाती है। थोड़ा आत्मविश्वास, थोड़ा रहस्य और थोड़ा 'मैं सबसे अलग हूं' का भाव उसकी पर्सनालिटी में आ जाता है। इंस्टाग्राम रील से लेकर कॉलेज फेस्ट तक अगर किसी एक एक्सेसरीज पर सबसे ज्यादा जोर दिखता है, तो वह है सनग्लास। यही कारण है कि सनग्लासेस को यंगस्टर्स के एटीट्यूड का सबसे खास हिस्सा माना जाता है।

सोशल मीडिया का बड़ा रोल: आज के दौर का फैशन सिर्फ सड़क या कॉलेज में दिखाने तक सीमित नहीं है बल्कि सच बात तो यह है कि वह बाकी किसी भी जगहों से ज्यादा सोशल मीडिया के लिए होता है। गर्मी के दौरान सनग्लासेज, डिजिटल फैशन का सबसे इंपॉर्टेंट पार्ट बन जाता है। चेहरे पर सनग्लास लगी सेल्फी ज्यादा शार्प होती है, इसमें आंखों का एक्सप्रेशन कंट्रोल किया जा सकता है। सनग्लास की वजह से एक कूल और कंट्रोल्ड इमेज बनती है। यही कारण है कि युवाओं के सनग्लास सिर्फ पहनने की चीज नहीं बल्कि कंटेंट क्रिएशन का टूल बन चुका है।

फैशन+परफेक्शन=परफेक्ट समर कॉम्बो: गर्मी के मौसम में जहां एक तरफ स्टाइल जरूरी है, वहीं दूसरी तरफ आसमान से बरसती आग से बचना भी जरूरी है। इसलिए सनग्लासेज इस मौसम के लिए सबसे परफेक्ट कॉम्बो एक्सेसरीज माने जाते हैं। सनग्लासेज इस बैलेंस को सचमुच परफेक्ट बनाते हैं, क्योंकि इनसे- तेज धूप से आंखों की सुरक्षा संभव होती है। पसीने और थकान में भी फ्रेश लुक बनी रहती है। ट्रैवल के दौरान आरामदायक विजन मिलता है यानी यह एक्सेसरीज सिर्फ दिखने के लिए नहीं बल्कि जीने के तरीके को भी आसानी से बदल देती है।

कई वैरायटीज में उपलब्ध: सनग्लासेस आज एक्सेसरीज में बदल चुके हैं। अब ये टिंटेड लैंस यानी ब्लू, यलो और पिंक कलर में भी उपलब्ध हैं। आज बाजार में सनग्लासेज बोल्ड और ड्रामेटिक दिखने वाले ओवरसाइज्ड फ्रेम में भी मौजूद हैं। सनग्लासेज वो एक्सेसरीज हैं, जिसे युवा सबसे ज्यादा एक्सप्लोर करते हैं, क्योंकि इनके जरिए अब हर चेहरा अपना एक अलग स्टाइल कैरी कर सकता है। *